ॐ

" आमुख "

श्री 'अमृत-कुण्ड' पोखरीबल नाम से प्रसिद्ध तीर्थ श्री शारिका देवी का मूलपाद है। यहां निरन्तर निकलता हुआ अमृत प्रवाह भक्तों को भुक्ति तथा मुक्ति दोनों प्रदान करता है। भक्त की आध्यात्मिक उन्नति में भगवती के चरणों की उपासना का अनन्य महत्व है। शैव शास्त्र में भी जगदंबा के चरणकमलों की उपासना को ही प्रधान माना गया है। आदि शंकराचार्य द्वारा रचित सौन्दर्यलहरी का यह प्रसिद्ध श्लोक इसी बात को स्पष्ट करता है :-

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥

हमारे पूर्वज श्री 'अमृत कुण्ड' में ही एकत्रित होकर जगदंबा के चरणों की पूजा करते थे। उनके विचार में हारीपर्वत पर स्थित श्रीचक्र या प्रद्युम्नपीठ पर स्थित चक्रेश्वर महाशक्ति श्री शारिका का मुख है। साधारण साधक को वहां जाने की शक्ति नहीं अतः उसे अमृत-कुण्ड में स्थित दुर्गा के चरणकमलों की ही

पूजा करनी चाहिए। हारी-पर्वत की पहाडी मधु, कैटभ, महिषासुर, चण्ड-मुण्ड आदि को मारने वाली शारिका देवी द्वारा अधिष्ठित पवित्रतम स्थान है। यहां श्री शारिका अपनी नौ करोड मूर्तियों सहित निवास करती है। अतः पहाडी की एक एक शिला उसी का स्वरूप है। श्री शारिका हमारी इष्टदेवी है और हमारे इष्टदेव श्री वामदेव हैं जिनका निवास अमृत-कुण्ड पोखरीबल के साथ ही है। श्री गणेश मन्दिर से लेकर काठीदरवाजा तक की सारी भूमि, जिसमें पोखरीबल भी आता है, देवी देवताओं का निवास स्थान है। लोग प्राचीन काल से इहलोक की तथा आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने के लिए हारी-पर्वत की परिक्रमा करते आए हैं। इनके मनोरथ अवश्य पूर्ण हो जाते है। उपर्युक्त सभी बातें निम्नांकित श्लोक से स्पष्ट हो जाती है :-

या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशनी।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ॥

यहां के साधु महात्मा हारीपर्वत की परिक्रमा करके अमृत-कुण्ड पोखरीबल में देवी-चरणों की पूजा करते थे। वे [illegible] पर [illegible] तक जाने का साहस

ही न करते थे। श्री ऋषि प्रवीर अपने शिष्यों की प्रार्थना पर एक बार श्रीचक्र की पूजा करने गए थे परन्तु उन्हें तुरन्त पोखरीबल में आकर देवी की चरणों की ही पूजा करनी पडी थी। पोखरीबल में ही देवी की पूजा करना यहां की परंपरा के अनुकूल है और तत्काल फलदायक है। इसी अमृत-कुण्ड में अनेक साधुओं, महात्माओं को सिद्धि प्राप्त हुई है। इनमें से कइयों के नाम इस प्रकार हैं :-

स्वामी आनन्द जी, स्वामी राज़दान साहब, स्वामी बालजी काव, स्वामी सुनकाक जी, स्वामी नन्दलाल जी, स्वामी गोपी नाथ जी (भगवान् जी), ये सभी साधु महात्मा आधुनिक काल के हैं। स्वामी आनन्दजी को यहीं शक्ति समावेश प्राप्त हुआ। ये सभी नर नारियों को शक्ति रूप में ही देखते थे। ये फिर जमनगरी शोप्यान में अपनी साधना में लीन रहते थे। स्वामी गोपीनाथ जी (भगवान जी) को भी यहीं सिद्धि प्राप्त हुई। 'भगवान जी' को अमृत कुण्ड पोखरीबल में देवी के दर्शन हुए थे, देवी एक सुन्दर कन्या के रूप में उनके सामने नाचती हुई प्रकट हुई और फिर अन्तर्ध्यान हुई। स्वामी बालजी काव यहीं से सिद्धि प्राप्त करके गए और फिर ईशबर गुप्तगंगा में साधना करते रहे। १९४७ में जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया था तो स्वामी नन्द लाल जी मस्ताना यहीं महाशक्ति के शरण आए, उनके आदेश से नन्द लाल जी ने घोषणा की कि कश्मीर भारत का जरूर अङ्ग रहेगा। फिर क्या था ? आक्रमण

-कारी शीघ्र ही भगाए गए। स्वामी सुनकाकजी यज्ञ का संकल्प लेकर देवी को प्रसन्न करने के लिए पोखरीबल आये। उनके हर्ष की सीमा न रही जब देवी ने प्रसाद ग्रहण किया और उनको जगदंबा की दया से निर्वाण प्राप्त हुआ। अपने आश्रम पहुं-चने से पूर्व ही वे मुक्त हुए।

इस पुस्तक में श्री गणेशस्तोत्र, देवीध्यानरत्नमाला, साम्बपञ्-चाशिका, सौन्दयलहरी तथा स्वामी रामानन्दजी की गङ्गा-स्तुति, स्वामी गोविन्दकाक जी की गुरूस्तुति का संकलन है। गङ्गास्तुति एवं गुरुस्तुति शैव तथा वेदान्त पर आ-धारित दुष्प्राप्य कश्मीरी रचनाए हैं जिन में उपयुक्त दो भक्तों ने अपने इष्टदेव के प्रति अनन्य भक्ति का प्रदर्शन किया है। भक्तों से यह प्रार्थना की जाती है कि वे कश्मीरी भाषा के प्रयोग के लिए इस पुस्तक में दी गई कुञ्जी का पहले ध्यान पूर्वक अध्यन करें ताकि उनको यह दो स्तुतियां पढने में कोई कठिनाई न आये।

यह पुस्तक प्राचीन अष्टमी मण्डली श्री अमृत-कुण्ड पोखरीबल के तत्त्वावधान् में प्रति शुक्लाष्टमी को नियमित रूप से अमृत-कुण्ड में पाठ पूजा करने वाले भक्तों के द्वारा संगृहीत है। अष्टमी की रात्रि को इस पुस्तक में संकलित सभी श्लोकों का पाठ होता है। श्री शारिका पादमूल श्री अमृत-कुण्ड पोखरीबल में साधना करने वाले

भक्तों, चक्रेश्वर, श्री महाराज्ञी, खीरभवानी (तुलमुला) एवं श्री देवीबल अनन्तनाग, में पूजापाठ करने वाले भक्तजनों की इच्छा पूर्ति के लिए यह पुस्तक संकलित की गई है।

इस पुस्तक के संकलन में जिन जिन भक्तों ने सहयोग प्रदान किया है अष्टमी मण्डली उनके प्रति अभारी है। विशेषकर श्री सुदर्शनकौल (एडवोकेट) इस महान सकलन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। समय समय पर अपने अमूल्य सुझाव देकर उन्होंने इस संकलन को परिष्कृत और परिमार्जित रूप देने में हमें अपना अपूर्व योगदान प्रदान किया जिन के लिए हम उनके प्रति असीम आभार प्रकट करते हैं। भक्तवर श्री बलजी कंडू के प्रति मण्डली आभारी है। इन्होंने बिना संकोच पुस्तिका के मुद्रण के लिए कागज़ दिया और अपना बहुमूल्य समय इस पुण्य कार्य में लगाया। श्री नरेश कुमार जाला ने इस पुस्तक के संपादन में अपना सारा समय आदि से अन्त तक लगाया। अष्टमी मण्ड-ली उनके प्रति भी अभारी है।

इस पुस्तक के मुद्रण में हमें कई कठिनाइयों का सामना करना पडा है। मुद्रण सम्बन्धी कई त्रुटियां भी रह गई है जिन्हें शुद्ध करने का यथेष्ट प्रयास किया गया है। फिर भी यदि कोई न्यूनता या अशुद्धि रह गई हो, पाठकों से अनुरोध है कि वे इन की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करें ताकि आगामी संस्करणों में उन अशुद्धियों तथा न्यूनाताओं का निराकरण किया जा सके। इसके व्यतिरिक्त यद्योपस्तुति व्याकरण के अनुसार यद्यपि अशुद्ध भी है

परन्तु कश्मीर में भगतजन प्रायः इस स्तुति का बड़ी श्रद्धा से पाठ करते हैं। श्रद्धा का शस्त्र विधि अविधि, शुद्धि अशुद्धि के लिए रामबाण का काम देता है।

इस संग्रह के प्रकाशन सम्बन्धी सर्वाधिकार सम्पादकों के अधीन हैं। अतः कोई महानुभाव इस संग्रह का पुनर्मुद्रण, अनुवाद आदि हमारी अनुमति के बिना करने का कष्ट न करे।

प्राचीन अष्टमी मण्डली
श्री शारिका पादमूलीय, श्री अमृत-कुन्ड
पोखरीबल, हारी-पर्वत,
श्रीनगर, काश्मीर

सप्तर्षि संवत् ५०५६ आषाढ़
शुक्लपक्ष अष्टमी, रविवार,
तदनुसार जुलाई २०, १९८० ।

अमृतलहरी



या खड्ग डमरू त्रिशूलपरशु [illegible]पाशौ गदां
चक्रं मुद्गरचापबाणवरदाभीतीः कपाला[illegible]ङ्कुशौ ।
धत्ते तोमरपुस्तकं च मुसलं [illegible]
देवीभिः परिवारिता शशिधरा सा शारिका पातु नः ॥

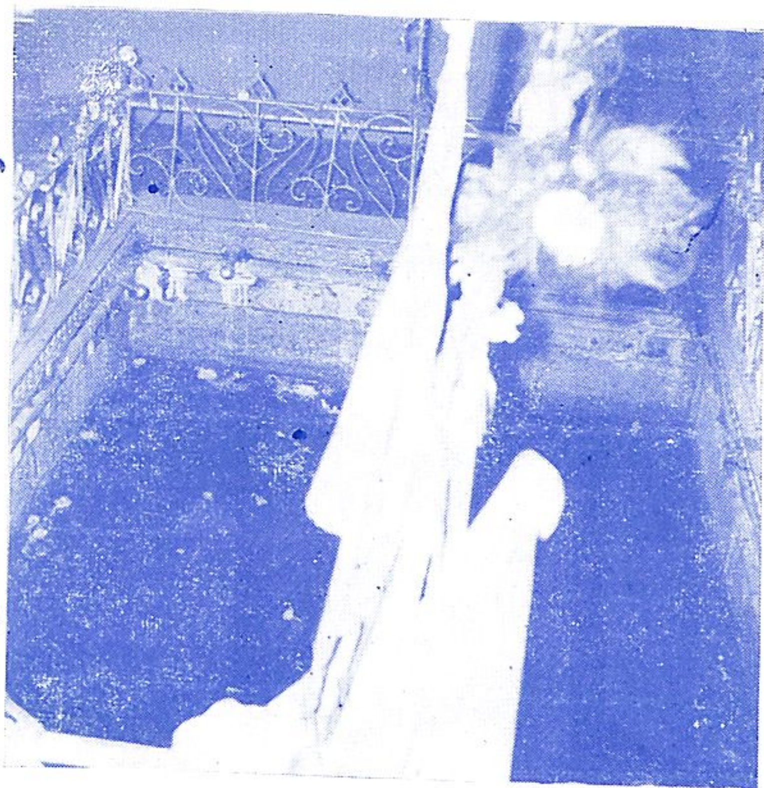
परन्तु कश्मीर में भक्तजन प्रायः [illegible]
करते हैं। श्रद्धा का शब्द [illegible]
समझाने का काम देता है।

इस [illegible]
अधीन हैं। [illegible]
बाद [illegible]

[illegible]

सप्तर्षि संवत् ४०५४ [illegible]

अमृतलहरी



या खड्गं डमरूं त्रिशूलपरशू खट्वाङ्गपाशौ गदां
चक्रं मुद्गरचापबाणवरदाभीतीः कपालाङ्कुशौ ।
धत्ते तोमरपुस्तके च मुसुलं दोर्भिर्दशात्ताष्टभि-
र्देवीभिः परिवारिता शशिधरा सा शारिका पातु नः ॥



❀ ॐ नमो भवान्यै ❀

सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य
सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्वकुमुदप्रकरावबोध
पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननि प्रणामः ।१।

उद्दामकामपरमार्थ सरोजषण्ड
चण्डद्युतिद्युतिमुपासितषट्प्रकाराम् ।
मोहद्विपेन्द्रकदनोद्यतबोधसिंह
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ।२।

कालाम्बुवाहद्युतिमिन्दुवक्त्रां
तारावलीशोभिपयोधराढ्याम् ।
कपालपाशाँकुशशूलहस्ताम्
नीलाम्बरां यामवतीं नमामि ।३।

पद्मासनस्थां करपङ्कजाभ्यां
रक्तोत्पले सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।
सम्बिभ्रतीमाभरणानि रक्तां
पद्मावतीं पद्ममुखीं नमामि ।४।

दण्डादिरूढ परि पूरित भोग मोक्ष
इन्दुप्रसन्नवदनां जयदादिशोभां ।
आराधयामि बहुशत्रुविनाशिनी त्वां
पत्रीश्वरीं विजयनीं जयदां नमामि ।५।

चतुर्भुजामर्कसहस्रकोटिभां
त्रिलोचनां हारकिरीटशोभिताम् ।
चतुर्मुखाङ्कोपगतां महोज्जवलां
वेदेश्वरीं पञ्चमुखीं नमाम्यहम् ।६।

शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःख हरां नमामि ।७।

ब्रह्मेन्द्ररुद्रहरिचन्द्रसहस्त्ररश्मि
स्कन्दद्विपाननहुताशनवन्दितायै ।
वागीश्वरि! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमातरन्त-
र्बहिश्चकृतसंस्थितये नमस्ते ।८।

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुगकरा श्वेतपद्मासनस्था
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्वदैत्येन्द्रहर्त्री ।
वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः सेविता या भवानी
नौम्येहं नौम्यहं त्वां हरिहरप्रणतां शारिकां नौमि नौमि ।९।

संसारार्णवतारिणीं रविशशिकोटिप्रभां सुप्रभां
पापातङ्कनिवारिणीं हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुताम् ।
दारिद्र्यस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशम्
अज्ञानान्धमतेःकवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ।१०।

चतुर्भुजां चन्द्र कलादि शेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीं ।
पाशां कुशाम्भो रुह खड्ग धारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्य दायिनीम् ।११।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।१।

बिभ्रद्दक्षिणहस्तपद्मयुगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे
वामे मोदकपूर्णपात्रपरशू नागोपवीती त्रिदृक् ।
श्रीमान्सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमा-
न्दिश्यादीश्वरपुत्र एष भगवांल्लम्बोदरः शर्म नः ।२।

गणानामधिपश्चण्डो गजवक्त्रस्त्रिलोचनः
प्रसन्नो भवतान्नित्यं वरदाता विनायकः ।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः ।३।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः
द्वादशैतानि नमानि गणेशस्य समाहितः
यः पठेत्तु शिवोक्तानि स लभेत्सिद्धिमुत्तमाम् ।४।

प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्
तृतीयं कृष्णपिङ्गं तु चतुर्थं तु कपर्दिनम् ।
लम्बोदरं पञ्चमं तु षष्टं विकटमेव च
सप्तमंविघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णंतथाष्टमम् ।५।
नवमंभालचन्द्रं तु दशमं तु विनायकम्
एकादशं गणपतिं द्वादशं मन्त्रनायकम् ।
यः पठेत्तु च्छृणुयाद्वापि तस्यसिद्धिर्न दूरतः ॥
विध्यारम्भेविवाहे च प्रवेशेनिर्गमे तथा
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।६।

योऽभ्यर्चितः सुरगणैर्वरसिद्धिहेतो-
श्छेत्तुं भयानि च करे परशुं दधानः ।
देवः स शम्भुदयितापरिवर्धितश्री-
र्विघ्नान्निवारयतु वारणराजवक्त्रः ।७।

सिन्दूरकुङ्कुमसुलाशनविद्रुमार्क

रक्ताब्जदाडिमनिभायचतुर्भुजाय ।
हेरम्भभैरवगणेश्वरनायकाय
सर्वार्थसिद्धि फलदाय गणेश्वराय ।८।

ॐ चिदचित्पदगम्भीरं गमागमपदोज्झितम् ।
गहनाकाशसंकाशं वन्दे देवं गणेश्वरम् ।९।

॥ श्रीसनत्कुमारुवाच ॥

शङ्कराद्ब्रह्मणा प्राप्तं पद्मयोनेर्मयाप्रभोः ।
तदहंकीर्तयिष्यामि स्तोत्रं परमदुर्लभम् ।१०।
षष्ठ्यां चतुर्थ्यामष्टम्यां चतुर्दश्यां च भक्तितः ।
पूजयेच्च गणाध्यक्षं श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।११।
अर्घैः पुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्माल्यैश्च चामरैः ।
वस्त्रैः कुण्डलकेयूरमौलिभिश्च वितानकैः ।१२।
भक्ष्यैर्भोज्यैरपूपैश्च मत्स्यैर्मांसैश्च मोदकैः ।
पानकैःफलमूलैश्च होमैर्मन्त्रादिभिस्तथा ।१३।
गङ्गाह्लदे तु गाङ्गेयं श्रीशैले तु गणेश्वरम् ।
वाराणस्यां गजमुखं मायायां ढुण्ढिराजम् ।१४।

प्रयागे तु गणाध्यक्षं केदारे विकटाननम् ।
लम्बोदरं कुरुक्षेत्रे नैमिषे च मदोत्कटम् ।१५।
जम्बकं दण्डकारण्ये लोकेशं हिमवद्गिरौ ।
विष्वक्सेनं च विन्ध्याद्रौ मलये हेमकुम्भकम् ।१६।
नायकं पुष्करद्वीपे विघ्नेशं शल्मलौ स्थितम् ।
इलावृते विश्वरूपं हरिवर्षे घटोदरम् ।१७।
त्रिनेत्रं सिंहलद्वीपे श्वेतद्वीपे तु वामनम् ।
उज्जयिन्यां तु लम्बोष्ठं मालवे शूर्पकर्णकम् ।१८।
सौराष्ट्रे वरदं नित्यं काश्मीरे भीमरूपिणम् ।
सिन्धुसागरयोर्मध्ये विज्ञेयं मन्त्रनायकम् ।१९।
हर्यक्षं यक्षभवने कैलासे परमेश्वरम् ।
महोदरं तु लुम्पायां चम्पायां शिखिवाहनम् ।२०।
पाशहस्तं त्रिकूटेषु पूजयेत्सर्वसिद्धिदम् ।
बलमग्निगुहायां तु पाटले सिंहवाहनम् ।२१।
पौण्ड्रे रौद्रमुखं चापि कलापिग्रामके जयम् ।
मेरुपृष्ठे [illegible] नन्दनं नन्दने वने ।२२।

विजयं वै गन्धवने देवदारुवने गणाम् ।
आर्तानां विघ्नहरणं गङ्गासागरसङ्गमे ।२३।
महापथे विरूपाक्षं चित्रसेनं तु पुष्करे ।
दुर्जयं यमुनातीरे स्तम्भनं गन्धमादने ।२४।
अम्बरीषं भद्रवटे मोहनं हस्तिनःपुरे ।
किष्किन्धायामुग्रकेतुं लंङ्कायां तु विभीषिणाम् ।२५।
कलिङ्गे वरुणं चैव विन्ध्यपादे मदोत्कटम् ।
अश्वत्थं च तुरुष्केषु चीनेषु त्रिशिखायुधम् ।२६।
वज्रहस्तं कोसलेषु दाक्षिणात्येषुलोहितम् ।
शूलोद्धतकं चैव मध्यदेशे प्रकीर्तितम् ।२७।
एकदंष्ट्रं पश्चिमाद्रौ पूर्वदेशेऽपराजितम् ।
उत्तरेचारुवक्त्रं च वरिष्ठं त्रिपुरेषु च ।२८।
हिरण्यकवचं चैव गिरिसन्धिषु संस्थितम् ।
सुमुखं नागरन्ध्रेषु नर्मदायां च षड्भुजम् ।२९।
मायापुर्यांमहामायं भद्रकर्णोह्रदे शिवम् ।
गोकर्णे गजकर्णं च कान्यकुब्जे गजाननम् ।३०।

पद्मासनं कामरूपे श्रीमुखं सर्वतः स्थितम् ।
वेदवेदाङ्गशास्त्रेषु चिन्तयेद्गणनायकम् ।३१।

अष्टाषष्टिस्तु नामानि स्तुतान्यद्भुतकर्मणः
नित्यं प्रभातकाले तु चिन्तयेत्सर्वसिद्धिदम् ।३२।

एतत्स्तोत्रं पवित्रं तु मङ्गलं पापनाशनम् ।
शस्त्रखर्वोदवेतालयक्षरक्षोभयापहम् ।३३।

चौरारण्यभयव्याघ्रव्याधिदुर्भिक्षनाशनम् ।
कृत्यादिमायाशमनं सर्वशत्रुविमर्दनम् ।३४।

त्रिसन्ध्यं यः पठेदेतत्स भवेत्सर्वसिद्धिभाक् ।
गणेश्वरप्रसादेन लभते शाङ्करं पदम् ।३५।



-: तर्पणम् :-

गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविङ्कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिसीद् सादनम्
विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय गजमुखाय
लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय-
विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय महागणेशाय इतिआद्यपुराणे
चतुर्दशस्नानानि प्रितान्तप्रितासन्तु ॥



ॐ लाक्षासिन्दूरवर्णं सुरवरनमितं मोदकैर्मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं हिमकरसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम् ।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशुधरं साखुसिंहासनस्थं
गांगेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुरवधकरं विघ्नभक्षं नमामि ।३६

गौरीपुत्रं त्रिनेत्रं गजमुखसहितं नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्षं सर्वभक्षं सकलजनप्रियं सर्वगन्धर्वपूज्यम् ।
संपूर्णं भालचन्द्रं वरदमतिबलं हन्तृकं चासुराणां
हेरम्बमादिदेवं गणपतिममलं सिद्धिदातारमीडे ।३७।

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलेर्बन्धने
स्रष्टुं वारिरुहोद्भवेन विधिना शेषेण धर्तुं धराम् ।
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धाधिपैर्मुक्तये
ध्यातः पञ्चशरेण लोकविजये पायात्स नागाननः ।३८

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये ।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशकाय ।३९

हिमाद्रिशीतं द्विभुजंभुजङ्गैःपरेतगात्रं शिखिविष्टरस्थम् ।
नागेन्द्रकन्याप्रियपुत्रमाद्यं हृदिस्मरेभीष्टप्रदंकुमारम् ।४०।

दयाकर दयारूप दयामूर्ते दयावते ।
जगतां तु दयाकर्त्रे सर्वकर्त्रे नमोस्तुते ।४१।

कर्मणा मनसा वाचा ये प्रपन्ना विनायकम् ।
ते तरन्ति महाघोरं संसारं कामवर्जिताः ।४२।

संगारम्भेप्यजाताय बीजरूपेणतिष्ठते ।
धात्राकृतप्रणामाय गणाधिपतये नमः ।४३।

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय च ।
नमः ईश्वरपुत्राय गणेशाय नमोनमः ।४४।

माता यस्य उमादेवी पिता यस्य महेश्वरः ।
मूषको वाहनं यस्य स नः पायाद् गणाधिपः ।४५।

वन्देवराभयपिनाककपालखड्गखट्वाङ्ग-
दन्त मुसलाब्जकरं त्रिनेत्रम् ।

भीमं जटामुकुटिनं कमलासनस्थं
कश्मीरवासममलं गणराजमाद्यम् ।४६।

रक्ताङ्गरागं परश्वक्षमालासुदन्तपाणिं सितलड्डुपात्रम् ।
गजाननं सिंहरथाधिरूढं गणेश्वरं विघ्नहरं नमामि ।४७।

बालो बालपराक्रमः सुरगणैः संप्रार्थ्यसेऽहर्निशं
गायन्किंपुरुषाङ्गनाविरचितैः स्तोत्रैरभिष्टूयसे ।
हाहाहूहुकतुम्बुरुप्रभृतिभिस्त्वं गीयसे नारद
स्तोत्रैरद्भुतचेष्टितैः प्रतिदिनं प्रोद्धोषते सामभिः ।४८।

त्वां नमन्ति सुरसिद्धचारणा-
स्त्वां यजन्ति निखिला द्विजातयः ।
त्वां पठन्ति मुनयः पुराविद
स्त्वां स्मरन्ति यतयः सनातनाः ।४९।

परं पुराणं गुणिनं महान्तं हिरण्मयं पुरुषं योगगम्यम् ।
यमामनन्त्यात्मभुवं मनीषिणो विपश्चितं
कविमप्यक्षयं च ।५०।

गणानान्त्वा गणनाथं सुरेन्द्रं कविं
कवीनामतिमेध्यविग्रहम् ।
ज्येष्ठराजमृषभं केतुमेकमा नः
शृण्वन्नूतिभिः सीद शश्वत् ।५१।

नमो नमो वाङ्मनसातिभूमये
नमो नमो वाङ्मनसैकभूतये ।
नमो नमो नन्तसुखैकदायिने
नमो नमो नन्तसुखैकसिन्धवे ।५२।

नमो नमः शाश्वतशान्तिहेतवे
क्षमादयापूरितचारुचेतसे ।
गजेन्द्ररूपाय गणेश्वराय ते
परस्य पुंसः प्रथमाय सूनवे ।५३।

नमो नमः कारणकारणाय ते
नमो नमो मङ्गलमङ्गलात्मने ।

नमो नमो वेदविदां मनीषिणा-
मुपासनीयाय नमो नमो नमः।५४।

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदन्तं त्रिनेत्रं
बृहदुदरमनन्तं दन्तमाले ददानम्
परशुचषकपद्मद्वन्द्वहस्तारविन्दं
हरियुगलनिविष्टं श्रीगणेशं भजामि ।५५।

अभयवरदपाणिं लड्डुपात्रं सुदन्तं
नरपतिजपमालां नागपाशाङ्कुशं च ।
कनकमयविचित्रं मुद्गरं पानिपद्मे
परशुमपि वहन्तं विघ्नराजं नमामि ।५६।

विष भयविनाशं दुःख दारिद्र्य नाशं ।
सकल सुखविकासं श्री गणेशं नमामि ।५७।

महागणपतिं देवं महासत्यं महाबलम् ।
महाविघ्न हरंदेवं नमामि ऋण मुक्तये ।५८।

विघ्नेशो नः स पायाद्विहृतिषु जलधिं पुष्कराग्रेण पीत्वा
यस्मिन्नुद्धृत्य हस्तं वमति तदऽखिलं दृश्यते व्योम्नि देवैः।
क्वाप्यम्भः क्वापि विष्णुः क्वचन
कमलभूः क्वाप्यऽनन्तः क्वच श्रीः
क्वाप्यौर्वः क्वापि शैलः क्वचन
मणिगणः क्वापि नक्रादिसत्वाः ।५९।

विघ्नेशं विश्ववन्द्यं सुविपुलयशसं लोकरक्षाप्रदक्षं
साक्षात्सर्वापदासु प्रशमनसुमतिं पार्वतीप्राणसूनुम् ।
प्रायः सर्वासुरेन्द्रैः ससुरमुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं
कारुण्येनान्तरायामितभयशमनं विघ्नराजं नमामि ।६०।

ॐ ओं ओंकार रूपमहमित्च परं यत्सरूपंद्वितीयं
त्रैगुणा तीत लीलं कलयति मनस वाङ्मनोदूरवृती ।
योगेन्द्रं ब्रह्मरन्ध्रं सहजगुणमयं श्री हरेन्द्रं च सौख्यं
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमनगं व्यापकं चिन्तयामि ।६१।

जटामुकुटमण्डितं त्रिनयनं भजे षड्भुजं
सतीसरनिवासिनमसुरनाशनं लोहितम् ।
वराभयपिनाकिनं त्वसिकपाल भृच्छूलिनं
गणैर्वृतगणेश्वरं कमलगं च भीमाकृतिम् ।६२।

लम्बोदरैकवदनः कमलासनस्थ-
श्चन्द्रार्धमौलिरमलो भुजगेन्द्रहारः ।
भीमोऽष्टबाहुरुदितार्कमरीचिरष्ट-
सिद्धिप्रदो भवतु वाञ्छितसिद्धिदो नः ।६३।

देवं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
विघ्नेशं मदगन्धलोलमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारिताहितजनं सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ।६४।

संसिद्ध्यर्थनमत्सुरासुरमिलन्मौलिस्थितप्रोल्लसत्
सद्रत्नप्रभवप्रकृष्टविभवप्रेङ्खन्मयूखोज्ज्वलत् ।

श्रयो विघ्नमहाभयप्रशमने दिव्यं यदेकौषधं ।
भूयान्नो द्विरदाननाङ्घ्रिकमलद्वन्द्वं तदिष्टाप्तये ।६५।

गजाननं भूतगणाधिसेवितं
कपित्थजाम्बूफलसारभक्षणम् ।
उमापतेः शोकविनाशकारणं
नमामि विश्वेश्वरमाशु सिद्धिदम् ।६६।

उच्चैर्ब्रह्माण्डखण्डद्वितयसहचरं कुम्भयुग्मं दधानः
प्रेङ्खन्नागारिपक्षप्रतिभटविकटश्रोत्रतालाभिरामः ।
देव्याः शम्भोरपत्यं भुजगपतितनुस्पर्धिवर्धिष्णुहस्त
स्त्रैलोक्याश्चर्यमूर्तिः स भवतुसततं भूतये कुञ्जरास्यः ।६७।

बिभ्रत्पञ्चमुखानि योयमुदितः स्वातन्त्र्यमात्रात्मना
शक्तेर्वैभवतः परप्रतिहतद्वैताख्यविघ्नव्ययः ।
एकीभूतमुखः सकारणगणानुकारिणा तेजसा
देवः संप्रति भासतां मयि यथा तत्त्वं गणाधीश्वरः ।६८।

हस्तीन्द्राननमिन्दुचूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसा-
दाश्लिष्टं प्रियया सपद्मकरया स्वाङ्कस्थया सन्ततम्
बीजापूरगदाधनुस्त्रिशिखयुक्चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्थविषाणरत्नकलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे ।६६।

द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं मुसलाम्भोजधरं महोपवीतम् ।
द्विमृगाधिपगामिनं त्रिनेत्रं हरपुत्रं द्विरदाननं भजेऽहम् ।७०।

ध्यायेद्बालदिवाकर द्युतिनिभं दैत्येन्द्रशत्रुं तथा
देवेन्द्रप्रमुखप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं दिवि ।
सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं स्वव्यक्ततत्त्वप्रियं
संरक्तायतलोचनं पवनजं रुद्रात्मजं चिन्तये ।७१।



ॐ हेमजा सुतं भजं गणेशं ईश नन्दनम्
एक दन्त वक्र तुण्ड नागयज्ञोसूत्रकम् ।
रक्त गात्र धूम्रनेत्र शुक्ल वस्त्रमडितम्
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।७२।

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणीम्
अग्निकोटि सूर्यज्योति वज्रकोटि पर्वतम् ।
चित्रमाल भक्तिजाल बालचन्द्र शोभितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।७३।

विश्ववीर्यं विश्वदीर्घं विश्वकर्म निर्मलम्
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।७४।

भूतभव्य हव्य कव्य भत्र भार्गव वन्दितम्
देववह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ।
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।७५।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधानदायकम्
यज्ञकर्म सर्व धर्म वर्ण वर्णारुचितम्
भूतधूम्र दुष्ट मुष्ट दायकं विनायकम्
कल्प वृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।७६।



ॐ नमो भगवत्यै ॐ नमो भवान्यै । ॐ

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी
दीनानाथकृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती ।
ओंकाराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयान्नो वरदा सदा ह्यभयदा कामेश्वरी कामदा ।१।

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्त्वद्गुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिश्चेतसि ।

त्वत्पदार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि ! मा शाम्यतु ।२।

वराङ्कुशौ पाशमभीतिमुद्रां
करैर्वहन्तीं कमलासनस्थाम् ।
बालार्ककोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां
भजेहमाद्यां भुवनेश्वरीं ताम् ।३।

अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्
सुधनुःशूलकतर्जनीं दधाना ।
भवतां महिषोत्तमाङ्गसंस्था
नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ।४।

शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरां नमामि ।५।

अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती
मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती ।
दुरितमपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती
जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयन्ती ।६।

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम्
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम् ।
प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम्
भवानीं कालसंहारबद्धमुद्राविभूषिताम् ।७।

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः ।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ।८।

ॐ नमो भवान्यै

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ।९।

सुरासुरशिरोरत्नरञ्जिताङ्घ्रियुगं प्रभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत ।१०।

॥ श्री नन्दिकेश्वर उवाच ॥

देवदेव जगन्नाथ संशयोस्ति महान्मम ।
रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तिवत्सलम् ।११।

देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद्दिवानिशम् ।
पठ्यतेऽविरतं नाथ ! त्वत्तःकिमपरः परः ।१२।

इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः ।
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः ।१३।

श्रीभगवानुवाच

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत् ।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् ।१४।

पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतना ।
गुणत्रयमयी शक्तिर्मूलप्रकृतिसंज्ञिता ।१५।

तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्वैस्तैर्महदादिभिः ।
चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी ।१६।

हेतुः सङ्कल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा ।
इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम् ।१७।

ततो वागितिविख्याता शक्तिःशब्दमयी परा ।
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ।१८।

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा ।
सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी ।१९।

तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते ।
तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते ।२०।

अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता ।

आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।२१।

तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम् ।
सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्यप्राणिपुजितैः ।२२।

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा ।
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम् ।२३।

तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम् ।
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम् ।२४।

सपन्नगं ससमुद्रं सशैलवनकाननम् ।
सराशिग्रहनक्षत्रं पञ्चभूतगुणान्वितम् ।२५।

नन्दिन्नामसहस्त्रेण स्तवेनानेन सर्वदा ।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ।२६।

इत्युक्त्वोपरतं देवं चराचरगुरुं विभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ।२७।

॥ श्रीनन्दिकेश्वरुवाच ॥

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते ।
भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादःक्रियतां मयि ।२८।

देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु ।२९।

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

शृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम् ।
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम् ।३०।

शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः ।३१।

अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवराजस्य, महादेवऋषिः,
अनुष्टुपछन्दः, आद्याशक्तिः, भगवती भवानी देवता,

ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं अमुक-कामनासिद्ध्यर्थे पाठेविनियोगः ॥

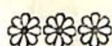
॥ अथ करन्यासः ॥

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः, ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः, ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यांनमः, ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ करालिन्यै करतलकरपृष्ठा-भ्यां नमः ॥

॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥

ॐएकवीरायै हृदयायनमः, ॐमहामायायै शिरसेस्वाहा। ॐपार्वत्यै शिखायै वषट्, ॐगिरिशप्रियायै कवचायहुम्। ॐगौर्यै नेत्रत्राय वौषट्, ॐकरालिन्यै अस्त्रायफट् ॥

॥ अथ प्राणायामः ॥



बालार्कमण्डलाभासं चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ।३२।

अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्याम-
म्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम् ।
रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ।३३।

माता भवानी च पिता भवानी
बन्धुर्भवानी च गुरुर्भवानी ।
विद्या भवानी द्रविणं भवानी
यतो यतो यामि ततो भवानी ।३४।

श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां
नागेन्द्रहारवलयाङ्कितकण्ठमालाम् ।
सिन्दूरकुङ्कुमसहस्रमरीचिदीप्तां
श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ।३५।

बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूडां
वरासिचक्राभयबाह्यमाद्याम् ।
सिंहाधिरूढां शिववामदेह-
लीनां भजे चेतसि शारिकेशीम् ।३६।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या श्वेतपद्मासना
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या शुभ्रवस्त्रान्विता ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।३७।

या श्रीर्वेदमुखी तपःफलमुखी नित्यं च निद्रामुखी
नानारूपधरी सदा जयकरी विद्याधरी शङ्करी
गौरी पीनपयोधरी रिपुहरी मालास्थिमालाधरी
सा मां पातु सरस्वती भगवतीनिःशेषजाड्यापहा ।३८।

या देवी शिवकेशवादिजननी यावै जगद्रूपिणी
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजनतानन्दैकसंदायिनी

या पञ्चप्रणामन्निलिम्पनयनी या चित्कलामालिनी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ।३६।

कल्याणायुतपूर्णबिम्बवदना पूर्णेश्वरी नन्दिनी
पूर्णा पूर्णतरा परेशमहिषी पूर्णामृतास्वादिनी
सम्पूर्णा परमोत्तमाभृतकला विद्यावती भारती
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी ।४०।

या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ।४१।

या खड्गं डमरुं त्रिशूलपरशू खट्वाङ्ग पाशौ गदां
चक्रं मुद्गरचापबाणवरदाभीतीः कपालाङ्कुशौ ।
धत्ते तोमरपुस्तके च मुसुलं दोर्भिर्दशाष्टाभि-
र्देवीभिः परिवारिता शशिधरा सा शारिका पातु नः ।४२।

ब्रह्माणं च पुरन्दरं शिवहरी देवान्समस्तान्मुनीन्
या दृष्ट्या दयया विलोकयति सा देव्यम्बिका पार्वती ।
चक्रस्था निजबोधभासितजगच्छान्तात्मिका सर्वगा
सान्द्रानन्दप्रदा परा भगवती पायात्सदा शारिका ।४३।

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत् ।
कश्मीरप्रवरेशमध्यनगरीप्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्री शारिका पातु नः ।४४।

प्रोतप्रायंऽपञ्जरंकृतवती प्रद्युम्नमन्मोचितम् ।
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः ।४५।

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुगकरा श्वेतपद्मासनस्था
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्वदैत्येन्द्रहर्त्री ।
वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः सेविता या भवानी
नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहरप्रणतां शारिकां नौमि नौमि ।५६।

किं किं दुःखं दनुजदलिनि क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ।४७।

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां
हस्ताम्भोजैः सपाशाङ्कुशमदनधनुः सायकैर्विस्फुरन्तीम् ।
आपीनोत्तुङ्गवक्षोरुहतटविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं
ध्यायाम्यम्भोरुहस्थामरुणविवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ।४८।

ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठितां
ज्वालाडम्बरभूषितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः ।
षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरगदाम्भोजाभयान्बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ।४९।

संसारार्णवतारिणीं रविशशिकोटिप्रभां सुप्रभां
पापातङ्कनिवारिणीं हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुताम् ।

दारिद्र्यस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशम
अज्ञानान्धमतेः कवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ।५०।

सैन्यानां महिषासुरस्य मृतिदां सिंहाधिरूढामुमां
नानाकारविशेषसौख्यजननीं देहान्तरैः संस्थिताम् ।
बालामध्यमवृद्धरूपरमणीं श्रीसुन्दरीं वैष्णवीं
स्त्रीरूपेण जगद्विमोहनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम् ।५१।

ज्वालामुखि महाज्वाले ज्वालापिङ्गललोचने
ज्वालातेजे महातेजे ज्वालमुखि नमोस्तुते ।५२।
नमो भगवति ज्वाले कालि त्रिपुरसुन्दरि
सर्वबीजपालयत्रि ज्वालामुखि नमोस्तुते ।५३।
आकाशे चण्डिका देवी पाताले भुवनेश्वरी
मर्त्यलोके जयादेवी पायात्त्रिपुरसन्दरी ।५४।
अघोरव्याधिनाशी च सर्वदुःखविनाशिनी
अष्टादशभुजा पायाच्छारिका श्यामसुन्दरी ।५५।

श्रीशारिके शरण्ये त्वं मयि दासे कृपां कुरु
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाशय सत्वरम् ।५६।

प्रद्युम्नशिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम्
पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ।५७।

अमा चैवतु कामा च चार्वङ्गी टङ्कधारिणी
तारा च पार्वती पायाद्यक्षिणी शारिकाष्टमी ।५८।

शान्तिं नयस्याशु जनस्य पापं
रिक्तत्वमर्थेन निराकरोषि
कायं निषिञ्चस्यपि भाग्यपूरैः
प्रगीयसेऽतः खलु शारिकात्वं ।५९।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।६०।

या देवी सर्वभूतेषु मोक्षदात्री सरस्वती
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।६१।

शारदा वरदा देवी मोक्षदात्री सरस्वती
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।६२।

उों जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ।६३।

तां भवानीं भवाऽनीतक्लेशनाशविशारदाम्
शारदां शरदम्भोजसितपद्मासनां नुमः ।६४।

शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक मालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम् ।६५।

श्री श्रीशैले स्थिता या प्रहसितवदना पार्वती शूलहस्ता
वह्निसूर्येन्दुनेत्रा त्रिभुवनजननी षड्भुजा सर्वशक्तिः ।
शाण्डिल्येनोपनीता जयति भगवती भक्तिगम्यानुयाता
स नः सिंहासनस्था ह्यभिमतफलदा शारदा शं करोतु ।६६

मूलाधाराद्धुतवहकलामिश्रितं भूर्भुवःस्व-
र्ब्रह्मस्थानात्परमगहनात्तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गोदेवः शशिकलमयी धीमहीत्येकरूपं
धियो योनः परमममृतं चोदयान्नः परं तत् ।६७।

प्रातः काले कुमारी कुमुदकलिकया जप्यमालां जपन्ती
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारूनेत्रा विशाला ।
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगे मुण्डमालां वहन्ती
सा देवी दिव्यदेहा हरिहरनमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा ।६८।

पूर्वाह्ने भाति रक्ता हुतवहवदना हंसयानैकसंस्था
मध्याह्ने चापि शुक्ला वृषवरवहना नागयज्ञोपवीता ।
कृष्णा चैवापराह्ने गरुडरथधरा शङ्खचक्रादिहस्ता
सा सन्ध्या पातु नित्यं वरशुकवहना ब्रह्मरूपा त्रिकाला ।६९।

ॐकारो यस्य मूलं क्रमपदजठरं छन्दविस्तीर्णशाखा
ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुरूधिरफलं स्यादऽथर्वा प्रतिष्ठा ।

यच्छायासुशीतो द्विजगणमधुपैर्गीयते यस्य नित्यं
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदवृक्षः ।७

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकरां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ।७१।

चतुर्भुजामर्कसहस्रकोटिभां
त्रिलोचनां हारकिरीटशोभिताम् ।
चतुर्मुखाङ्कोपगतां महोज्ज्वलां
वेदेश्वरीं पञ्चमुखीं नमाम्यहम् ।७२।

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि दैशिककटाक्षसमाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भववेददीक्षा ।७३।

पद्मासनस्थां करपङ्कजाभ्यां
रक्तोत्पले सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।
सम्बिभ्रतीमाभरणानि रक्तां
पद्मावतीं पद्ममुखीं नमामि ।७४।

पद्मेशपद्मोद्भवपद्मबन्धु
मुखाः सुराः पादरजोपि यस्याः
चिन्वन्त आप्ता न गताश्च पारं
पद्मावती सा मम सद्मगास्तात् ।७५।

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनिविश्वमातः ।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ।७६।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।७७।

अक्षस्रक्परशूगदेषुकुलिशान्पद्मं धुनष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शनौ च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभैः
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।७८।

नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली
भास्वद्देहलतां विभाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धमौलिं परां
सर्वेशेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तयेत् ।७९।

रे मूढाः किमयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहाः ।
भक्तिश्चेदविनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यतामु-
न्निद्राम्बुरुहातपत्रसुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति ।८०।

तडिद्वल्लीं नित्याममृतसरितं पाररहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुणग्रन्थिगहनाम् ।
गिरां दूरां विद्यामविनतकुचां विश्वजननीम
अपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम् ।८१।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान्कनककुण्डलवान्किरीटी
हारीहिरण्मयवपुर्धृतशङ्ख चक्रः ।८२।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।८३।

मेघश्यामं पितकौशेयवासं
श्री वत्सांकं कौस्तुभोद्भासितांङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुंडरीकायताक्षं

विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ।८४।

॥ अथ पुरुषसूक्तं ॥

उों आनुष्टुभस्य सूक्तस्य त्रिष्टुबऽन्तस्य देवता ।
विश्वात्मा पुरुषः साक्षादृर्षिनारायणः स्मृतः ॥

उों पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम् ॥

उों सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदऽन्नेनातिरोहति ॥

एतावानऽस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादऽस्यामृतं दिवि ॥

त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विश्वं व्यक्रामत्साशनाऽनशने अभि ॥

तस्माद्विराडऽजायत विराजो अधिपुरुषः
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमऽथो पुरः ।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमऽतन्वत
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्यांश्च ये ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादऽजायत ।

तस्मादऽश्वा अजायन्त ये के चोभादतः
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्
मुखं किमऽस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्यते ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः
ऊरू तदऽस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरऽजायत ।

नाभ्या आसीदऽन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकानऽकल्पयन् ।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषंपशुम् ।

यज्ञेन यज्ञमऽयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः
दिवीव चक्षुराततम् ।
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः
समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥

नमोऽस्त्वऽनन्ताय सहस्त्रमूर्तये
सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः ।१०३।

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।१०४।

अच्युताच्युतहरे परमात्मन्राम
कृष्ण पुरुषोत्तम विष्णो ।
वासुदेव भगवन्ननिरुद्ध
श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१०५।

विश्वमंगलविभो जगदीश
नंदनंदन नृसिंह नरेन्द्र ।

मुक्तिदायक मुकुंद मुरारे
श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१०६।

रामचंद्र रघुनायक देव
दीननाथदुरितक्षयकारिन् ।
यादवेंद्र यदुभूषण यज्ञ
श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१०७।

देवकीतनय दुःखदवाग्ने
राधिकारमण रम्य सुमूर्ते ।
दुःखमोचन दयार्णव नाथ
श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१०८।

गोपिकावदनचंद्रचकोर
नित्य निर्गुण निरंजन जिष्णो ।
पूर्णरूपजयशंकर शर्व
श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१०९।

गोकुलेश गिरिधारणधीर

यामुनाच्छतटखेलनवीर ।

नारदादिमुनिवंदितपाद

श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।११०।

द्वारकाधिप दुरंतगुणाब्धे

प्राणनाथ परिपूर्ण भवारे ।

ज्ञानगम्य गुणसागरब्रह्मन्

श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।१११।

दुष्टनिर्दलन देव दयालो

पद्मनाभ धरणीधरधीमन् ।

रावणांतक रमेश मुरारे

श्रीपते शमय दुःखमशेषम् ।११२।

अच्युताष्टकमिदं रमणीयं

निर्मितं भवभयं विनिहंतुम् ।

यः पठेद्विषयवृत्तिनिवृत्ति

जंन्मदुःखमखिलं स जहाति ।११३।

कृष्ण त्वदीयपदपंकजपंजरांते

अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ।

प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः

कंठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ।११४

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती
दानं पद्मयुगाभयौ च वपुषा सौदामिनीसन्निभा ।
मुक्ताहारविराजमानविपुलस्तुङ्गस्तनोद्भासिनी
पायान्नः कमला कटाक्षविभवैरानन्दयन्ती हरिम् ।११५

देवीं शुद्धस्फटिकधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां
दोर्भिर्युक्तां दशभिरभितः शोभितां रत्नहारैः ।
काद्यं मुण्डं सृणिममसृणं शूलमच्छाच्छधारं
सारात्सारं वरमनवरं दक्षहस्तैर्वहन्तीम् ।११६।

उत्खट्वाङ्गं कठिनविकटं टङ्कमूर्जस्वदंकं
पाशं ज्ञानामृतरसमयं पुस्तकं चाभयं च ।
कामं वामैः शुभकरतलैर्बिभ्रतीं विश्ववन्द्यां
पद्मां प्रेतोपरिकृतपदां सिद्धलक्ष्मीं नमामि ।११७।

इच्छाशक्तिप्रथमलहरीमम्बरान्तःप्रवाह
गर्भीभूतां त्रिविधमुदितां पञ्चधा प्रस्फुरन्तीम् ।
सम्यग्देवीं स्फटिकधवलां शुद्धकुन्देन्दुवर्णां
रुद्रारूढां दशभुजयुतां श्यामगात्रीं नमामि ।११८।

उद्यद्भास्वत्समाभाविहितरविजयां मुण्डखण्डावनद्धां
ज्योतिर्मौलिं त्रिनेत्रां विविधमणिलस-
त्कुण्डलामण्डिताङ्गीम् ।
हारग्रैवेयकाञ्चीगुणमणिनिलयामेकचित्राम्बराढ्या-
मम्बां पाशाङ्कुशाढ्याभयवरदकरां
सिद्धिदात्रीं नमामि ।११९।

अक्षसूत्राम्बुजकरामादर्शकलशान्विताम्
मीनपद्मासनासीनां वितस्तां शरणां श्रये ।१२०।

संसारसागरसमुद्धरणैकसारां
धर्मध्वजां शुभफलां व्रतसिद्धिहेतुम् ।
वैडूर्यशुभ्रमणिकाञ्चनगर्भगौरीं
त्वां नौमि पापशमनीं वरदां वितस्ताम् ।१२१।

तीर्थैश्च कोटिगुणितैश्च सहस्रसङ्ख्यै-
र्गङ्गाप्रयागगयनैमिषपुष्कराद्यैः ।
नित्यं प्रयाति परमामृततोयरूपा
या तां नमाम्यघहरीं वरदां वितस्ताम् ।१२२।

ये त्वां प्रभातसमये सततं स्मरन्ति
भावप्रहृष्टमनसो भवमोक्षलक्ष्मीम् ।
तेषां सदा भवति निर्मलदेहकान्ति
स्त्वां नौमि पापशमनीं वरदां वितस्ताम् ।१२३।

सन्तः शंसन्त्यमुत्र त्रिजगति जगतीमण्डलं
सारभूतं तत्रापि क्ष्माधरं तं
त्रिभुवनजननी जन्मने यं प्रपेदे ।
तत्राप्याहुः शुभानां विघटितविपदां
वेश्म कश्मीरदेशं त्वं तत्रानुग्रहार्थं
प्रवहसि भविनामों नमस्ते वितस्ते ।१२४।

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पुण्ये ब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणि स्वर्गमार्गे ।
प्रायश्चित्तं परं नस्तव जलकणिका ब्रह्महत्याद्यघानां
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ।१२

गङ्गैव मोक्षदा क्षेत्रं गङ्गा किल्बिषनाशिनी
त्रैलोक्यवरदे गङ्गे हरिगङ्गे नमोऽस्तु ते ।१२६।
दृष्टा जन्मशताधर्मं स्पृष्टा जन्मशतत्रयम्
स्नाता जन्मशतोत्थाघं हन्ति गङ्गा कलौ युगे ।१

हरतीयं महापापं गङ्गेश्वरसमुद्भवा
मातृपितृहिते गङ्गे हरिगङ्गे नमोस्तु ते ।१२८।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि नमोस्तु ते ।१२९।

नमः कल्याणदे देवि नमः शङ्करवल्लभे ।
नमो भक्तिप्रदे देवि अन्नपूर्णे नमोस्तु ते ।१३०।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।१३१।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।१३२।

उर्वी सर्वजनेश्वरी हिमवतः पुत्री कृपासागरी
नारी नीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वत्राणकरी सदा सुखकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।१३३।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय दयार्द्रचित्ता ।१३४।

या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरेका
सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च ।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम् ।१३५।

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरि गतामुरगोपवीताम् ।

खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम् ।१३६।

यत्पादपङ्कजतलेऽमरमूर्धमौलि-
न्यस्तेन्द्रनीलमणिसन्ततयः पतन्ति ।
किञ्जल्कपानरतमुग्धमधुव्रतत्वं
राज्ञी सदा भगवती जननीव नोऽव्यात् ।१३७।

पत्तिंत्यु लोकपतिर्वैभवमाददाति
देवाधिपोऽपि ननु पत्त्यनुकारमेति ।
यत्प्रोल्लसन्नयनयोगवियोगभवाद्
राज्ञीं महोपपदरम्यतरां नमामि ।१३८।

शीतांशुबालार्ककृशानुनेत्रां
चतुर्भुजामेनत्वक्रासनस्थाम् ।
शङ्खाब्जशूलासिधरां महेशीं
राज्ञीं भजेहं तुहिनाद्रिरूपाम् ।१३९।

स्मृतैवान्तर्गतं पुंसां हरन्ती सकलं मलम् ।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां कामदायिनी ।१४०।

त्रिजगन्मोहिनि ईड्ये मिहिरीभूतसद्गुणे ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम् ।१४१।

शेषाशेषमुखागण्यगुणे गुणगणप्रिये ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४२।

सुरासुरनरसिद्धवन्दनीयपदाम्बुजे ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४३।

चराचरजगत्सृष्टिस्थितिसंहारकारिणि ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४४।

भक्तकल्पलतेऽनल्पत्राङ्माधुर्यजितामृते ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४५।

ब्रह्मविष्णुमहेशानवन्दिते गिरिनन्दिनि ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४६।

भक्तानां भीमसंसारपारावारप्रतारिणि ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४७।

निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिणि ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।१४८।

राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत् ।
असंशयमशेषेण वशयेदखिलं जगत् ।१४९।

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी
दीनानाथकृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती ।
ॐ काराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयान्नो वरदा सदा ह्यभयदा कामेश्वरी कामदा ।१५०।

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्त्वद्गुण
ग्रामाकर्णनरागिती श्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिश्चेतसि ।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि! मा शाम्यतु ।१५

दुर्गां त्वां च सरस्वतीं भगवती ज्वालामुखीं शारदां
राज्ञीं शारिकया युतामघहरीं त्वां भद्रकालीं शिवाम्
वागीशीं त्रिपुरां भजामि समयां पीठेश्वरीं सिद्धिदां
गायत्रीं कमलासनस्य वनितां
श्रीकुब्जिकां कालिकाम् ।१५२।

उद्यच्चन्द्रकलावतंसितशिखां क्रींकारवर्णोज्जवलां
श्यामां श्याममुखीं रवीन्दुनयनां क्रींवर्णरक्ताम्बराम् ।
भैंबीजाङ्कितमानसां शवगतां नीलाम्बरोल्लसितां
स्वाहालङ्कृतसर्वगात्रलतिकां भैंभद्रकालीं भजे ।१५२।

श्यामां श्याममुखीं विलोलवपुषं सत्कोटराक्षीं शिवां
विंशत्युत्तररूपिणीं मधुमदोन्मत्तां च रक्ताम्बराम् ।
ब्रह्ममुण्डशिवादिविष्णुरशनाहस्तामनङ्गोज्जवलां
प्रेतस्थां हृदयाम्बुजे भगवतीं
भैंभद्रकालीं भजे ।१५३।

गौराङ्गीं धृतपङ्कजां त्रिनयनां श्वेताम्बरां सिंहगां
चन्द्रोद्भासितशेखरां स्मितमुखीं धुर्यां वहन्तीं धुरम् ।
विष्णिवन्द्रप्रणताकृतिं च त्रिदशैः सम्पूजितांघ्रिद्वयीं
गौरीं मानसपङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे ।१५४।

ऐन्दव्या कलयाऽवतंनतशिरोविस्तारिनादात्मकं
तद्रूपं जननि स्मरामि परमं सन्मात्रमेकं तव ।
यत्रोदेति पराभिधा भगवती भासां च तासां पदं
पश्यन्तीमनु मध्यमां विहरति स्वैरं
च सा वैखरी ।१५५।

कस्मादम्ब विलम्बसे कुरु कृपां केनापि रूपेण मे
जिह्वाग्रे वस सन्निधेहि हृदये वाग्देवि तुभ्यं नमः ।
तन्निर्यान्तु ममास्यकुञ्जकुहराद्धारादिभूषा तिरस्-
कारिण्यो रसपूरबन्धुरतया चेतो हरन्त्यो गिरः ।१५६।

बालार्कायुतभास्वरां त्रिनयनां मन्दस्मितोद्यन्मुखीं
राजच्चन्द्रकलाधरां सुकबरीपुष्पालिवृन्दाकुलाम् ।
कस्तूरीतिलकां घनस्तनभरां पाशाङ्कुशावैक्षवं
कोदण्डं कुसुमेषुमेव दधतीं हस्ताम्बुजैस्तां भजे ।१५७।

सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभां
शंखं चक्रवराभयानि दधतीमिन्दोः कलां बिभ्रतीम् ।
ग्रैवेयाङ्गदहारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुतां
ध्यायेद्विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं
पार्श्वस्थपञ्चाननाम् ।१५८।

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां निजकरैर्दानं च रक्तोत्पलं
रत्नाढ्यं चषकं परं भयहरं सम्बिभ्रतीं शाश्वतीम् ।
मुक्ताहारलसत्पयोधरघटीं नेत्रत्रयोल्लासिनीं
वन्देहं हरिपूजितां हरवधूं रक्तारविन्दस्थिताम् ।१५९।

वक्त्रैकेन विराजितां त्रिनयनां युग्मादिषट्त्रिंशता
बाहूद्धासिमहायुधोद्यतकराम्भोजैश्च सिंहासनाम् ।

विश्वद्रुङ्महिषासुरस्य हृदयं शूलेन निर्भेदिनीं
दुर्गाख्यां प्रणमामि लोकजननीं
त्वां रक्तगौरद्युतिम् ।१६०।

मातर्मे मधुकैटभोग्रमहिषप्राणापहारोद्यते
हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ।
निःशेषीकृतरक्तबीजदलिनि नित्यं निसुम्भापहे
सुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ।१६१।

आदिद्यान्तमहर्निशं तु नदती या शब्दराशिस्तथा
पश्यंतीत्युतमध्यमा खलु परा तस्याः परा वैखरी ।
सर्वप्राणिमयाऽखिलार्थजननी त्वेका चतुर्धा स्थिता
मातः सा त्वमचिन्त्यरूपमहिमा
वागीश्वरीत्युच्यसे ।१०२।

चापं पञ्चशरान्सृणिं विषधरं दोर्भिश्चतुर्भिः सदा
बिभ्रत्यद्भुतरूपरक्तविभवैरेकानना सर्वदा ।

देयान्नोऽद्य सदाशिवस्थविलसद्रक्ताब्जसंस्था सदा
देवी श्रीत्रिपुरा पुरारिनिरता सम्यग्वरं भूतये ।१६३।

बालामिन्दुकलावतंसितशिखां सूर्येन्दुवह्नीक्षणां
मालापुस्तकचापपाशयुगलं दोर्भिर्वहन्तीं सदा ।
उद्यत्सूर्यसहस्रदीप्तिसदृशीं स्मेराननाम्भोरुहां
ध्यायेहं त्रिपुरां परां भगवतीं त्रैलोक्यरक्षापराम् ।१६४।

मातः श्रीत्रिपुरे परात्परतरे देवि त्रिलोकीमहा
सौन्दर्यार्णवमन्थनोद्भवसुधाप्राचुर्यवर्णोज्जवलम् ।
उद्यद्भानुसहस्रनूतनजपापुष्पप्रभं ते वपुः
स्वान्ते मे स्फुरतु त्रिलोकनिलयं ज्योतिर्मयं
वाङ्मयम् ।१६५।

रक्ताब्धौ रत्नपोते रविदलकमलाभ्यन्तरे सन्निषण्णां
रक्ताङ्गीं रत्नमौलिं स्फुरितशशिकलां स्मेरवक्त्रां त्रिनेत्राम् ।

बीजापूरेषुपाशांकुशमदनधनुः सत्कपालानि हस्तै-
र्बिभ्राणामानताङ्गीं स्तनभरभरणाद्ऽम्बि-
कामाश्रयामः ।१६६।

चापं पाशाङ्कुशसरसिजान्यङ्कुशं पुष्पबाणान्
बिभ्राणां तां करसरसिजैरत्नमौलिं त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जाभां कुचभरनतां रत्नमञ्जीरकाञ्ची-
ग्रैवेयाद्यैर्विलसिततनुं भावयेच्छक्तिमाद्याम् ।१६७।

चन्द्रार्कानलकोटिनीरदरुचिं पाशाङ्कुशौचाशुगान्
मुण्डं खड्गमभीतिमीश्वरवरं हस्ताम्बुजैरष्टभिः ।
कामेशानशिवोपरिस्थितपदां त्र्यक्षां वहन्तीं परां
श्रीचिन्तामणिमन्त्रराजवपुषं ध्यायेन्महाषोडशीम् ।१६८।

त्र्यर्णा त्र्यश्रनिविष्टमूर्तिरधिका मुद्रात्रयोद्भासिता
या धत्तेऽङ्कुशपाशबाणनिचयं चापं चतुर्भिर्भुजैः ।

देवीभिस्तिसृभिस्तथाष्टभिरथो दिग्दिग्मनुख्यातिभि-
र्वस्वष्टप्रमिताभिरष्टभिरथो जीयाज्जगन्मातृका ।१६९।

प्रसीद [redacted] प्रसीद भक्तवत्सले ।
प्रसादं कुरु मे देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।१७०।

प्रसीद परदेवते मम हृदि प्रभूतं तमो
विदारय दरिद्रतां दलय देहि सर्वज्ञताम् ।
विधेहि करुणानिधे चरणपद्मयुग्मं स्वकं
विदारितजरामृतिं त्रिपुरसुन्दरि श्रीशिवे ।१७१।

गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता ।
अनङ्गकुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु नः ।१७२।

अरुणकिरणजालैरञ्जिताशावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ।

इतरकरवराढ्या फुल्लकल्हारसंस्था
निवसतु हृदि बालादित्यकल्याणरूपा ।१७३।

शब्दात्मिकासि विमलार्ग्यजुषां निदानम
उद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवित्रयी भगवती भवभावनाय
वार्तासि सर्वजगतां परमार्तिहर्त्री ।१७४।

ते समंता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि नच सीदति बन्धुवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।१७५।

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकद्वयेपि फलदानतु देवि तेन ।१७६।

देवि प्रसादपरमा भवती भवाय

सद्यो विनाशयति कोपवती कुलानि ।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-

न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ।१७७।

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र

बिम्बानुकारिकनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।

अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरूषा तथापि

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ।१७८।

दृष्ट्वापि देवि कुपितं भ्रकुटीकराल-

मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।

प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं

कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ।१७९।

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-

र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।

पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ।१८०।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।१८१।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
पुष्णासि कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।१८२।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ।१८३।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ।१८४।

सिंहात् उत्थाय कोपात् धर धर धर
कृतधावमाना भवानी
दैत्यानां दिव्य शस्त्रैः त्रह त्रह त्रह
कृत त्रोटयन्ती शरानाम् ।
तेषां रक्तं पिबन्ती घुट घुट घुट
कृत पूरयन्ती पिशाचाम्
तृप्ता तृप्ता हसन्ती ख ख ख
कृत शाम्भवी नः पुनातु ।१८५।

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः सञ्चिन्वन्विरचयति लोकानविकलान् ।

वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसा
हरः संक्षुभ्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम् ।१८६।

अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरोद्दीपनकरी
जडानां चैतन्यस्तवकमकरन्दस्रुतिसिरा ।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवती ।१८७।

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ।१८८।

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ।१८९।

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणामि-
ति स्तोतुं वाञ्छन्कथयति भवानि त्वमिति यः ।
तदैव त्वं तस्यै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ।१६०।

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः ।
करालं यत्क्ष्वेडं कवलितवतः कालकलना
न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ।१६१।

तडित्कोटिज्योतिर्द्युतिदलितषड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिवपुषा ।
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूतमनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बरकचम् ।१६२।

चतुःपत्रान्तः षड्दलभगपुटान्तस्त्रिवलय
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणिनियुताभद्युतियुते ।

षडश्रं भित्त्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं
कलाश्रं च व्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ।१६३।

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्यपदवीं
प्रविश्यैतद्द्वन्द्वं रविशशिसमाख्यं कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहनभस्मीकृतकुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब प्रविशति ।१६४।

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवह-
स्थितिं स्वाधिष्ठाने हृदि मरूतमाकाशमुपरि ।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसि ।१६५।

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरथो
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरिति मूलप्रकृतिभिः
त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव भुवनकोणाः परिणताः ।१६६।

अयः स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं
यथा रथ्यापाथः शुचि भवति गाङ्गौघमिलितम् ।
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमन्तर्यदि मम
त्वयि प्रेम्णासक्तं कथमिव न जायेत विमलम् ।१६७।

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां परशिवे
भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता ।
तथाहि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमुकुटाः ।१६८।

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ।१६९।

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।

अनेनायं धन्यो भवति नच ते हानिरियता
वने मा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ।२००।

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघे ।२०१

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तनभरा
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना ।
धनुर्बाणान्पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ।२०२।

यत्षट्पत्रं कमलमुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोंकारपीठम् ।
तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि ।२०३।

मूलालवालकुहरादुदिता भवानि
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निष्यन्दमानपरमामृततोयरूपा ।२०४।

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा-
वाप्लावनेषु भवतीमम्मृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ।२०५।

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचिद्
आनन्दमेव कतिचित्कतिचिच्चमायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरूणां गुरुमूर्तिमेव ।२०६।

श्रीमत्सुरासुराराध्यचरणाम्भोरूहद्वयीम् ।
चराचरजगद्धात्रीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ।२०७।

अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्

सुधनुःशूलकतर्जनीं दधाना ।

भवतां महिषोत्तमाङ्गसंस्था

नवदूर्वासदृशी श्रियेस्तु दुर्गा ।२०८।

रक्ताम्बरां सिंहगतां स्मितास्यां

पाशाङ्कुशौ नैकवटीं दधानाम् ।

विद्यां त्रिशूलं कमलं वहन्तीं

ध्यायामि त्वां देवदेवीमपर्णाम् ।२०९।

सृष्टौ संस्थापनाय त्वऽपहरणविधौ मोहनेऽनुग्रहेपि

सर्वेषामर्गलानां निजमहिमवशादक्रमेणैव याऽलम् ।

नित्यं क्रीडाप्रसक्ता रचयति सकलं स्वात्मशक्त्या प्रपञ्चं

सा नस्त्राणाय भूयादऽभिमतफलदा

भद्रकाली च काली ।२१०।

कालाम्बुवाहद्युतिमिन्दुवक्त्रां
तारावलीशोभिपयोधराढ्याम् ।
कपाल पाशांकुशशूलहस्तां
नीलाम्बरां यामवतीं नमामि ।२११।

खड्गं चक्र गदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुसुण्डीं शिरः
शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं
नीलाश्मद्युतिमाऽस्यपाददशकां
सेवे महाकालिकाम् ।२१२।

अक्षस्त्रक्परशूगदेषुकुलिशान्पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शनौ च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभैः
सेवे सौरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।२१३।

उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणाक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ।२१४।

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुलेखां
शंखं चक्रं कृपाणीं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्दाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां
सेवितां सिद्धिकामैः ।२१५।

घंटाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे सुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ।२१६।

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्या चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्र धनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीक्वणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ।२१७।

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रि सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कल्हाराबद्धमालानियमितविलसच्चूलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुमदविवशां
चित्रकोद्भासिभालाम् ।२१८।

नागाधीश्वरविष्टरांफणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां विभाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धमौलिं परां
सर्वेशेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तयेत् ।२१९।

बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः ।

बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रम-

अर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ।२२०।

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-

नेत्रां धनुःशरयुताङ्कुशकामपाशान् ।

रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां

कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ।२२१।

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां

तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।

स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाऽ-

भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।२२२।

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्दस्थितां भीषणां

कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।

हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं

विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां
त्रिनेत्रां स्मरे ।२२३।

बालार्कमण्डलाभासंचतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ।२२४।

पद्मासनस्थां करपङ्कजाभ्यां
रक्तोत्पले सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।
सम्बिभ्रतीमाभरणानि रक्तां
पद्मावतीं पद्ममुखीं नमामि ।२२५।

दण्डादिरूढ परि पूरित भोग मोक्ष
इन्दुप्रसन्नवदनां जयदादिशोभां ।
आराधयामि बहुशत्रुविनाशिनी त्वां
पत्रीश्वरीं विजयनीं जयदां नमामि ।२२६।

ये भावयन्त्यमृतवाहिभिरंशुजालै-
राप्यायमानभुवनाममृतेश्वरींत्वाम् ।

ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्ष्याम् ।२२७।

शर्वाणि सर्वजनवन्दितपादपद्मे
पद्मच्छदच्छविविडम्बितनेत्रलक्ष्मि ।
निष्पापमूर्तिजनमानसराजहंसि
हंसि त्वमापदमनेकविधां जनस्य ।२२८।

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके
सकलशब्दमयी किल ते तनुः ।
निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो
मनसिजासु बहिष्प्रसरासु च ।२२९।

इति विचिन्त्य शिवे शमिताऽशिवे
जगति जातमयत्नवशादिदम् ।
स्तुतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता
न खलु काचन कालकलास्ति मे ।२३०।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा

पुष्णासि कामान्सकलानभीष्टान् ।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां

त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।२३१।

पूर्णेन्दोःशकलैरिवातिबहुलैः पीयूषपूरैरिव

क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव

प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया

चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते

सम्पदं बिभ्रति ।२३२।

कृपापाङ्गालोकं वितर सहसा साधुचरिते

न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते ।

न चेदिष्टं दध्यादनुपदमहो कल्पलतिका

विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्लीपरिकरैः ।२३३।

अयः स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं
यथा रथ्यापथः शुचि भवति गाङ्गौघमिलितम् ।
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमन्तर्यदि मम
त्वयि प्रेम्णासक्तं कथमिव
न जायेत विमलम् ।२३४।

आलम्बाज्जननि त्वदीयचरणाम्भोजद्वयस्यासकृ-
द्वैर्वेणालवुना मया सुरगणा व्रीडास्पदं प्रापिताः
औदासीन्यमथो समाश्रयसि चेद्दैवाहते त्वं मयि
केषां वा वदनं कथं वद शिवे
पश्याम्यनालम्बनः ।२३५।

तत्त्वातत्त्वविशारदे भगवति श्रीशारदे शारदे
मातर्भारति तत्तमोऽपनयमेऽमेयप्रमासिद्धिदे ।
संशक्यं विनियन्तुमल्पमपि यन्नो पुष्पदन्तादिभि-

येनायं क्षपितान्तरायनिचयो निःश्रेयसं
प्राप्नुयाम् ।२३६।

यदुन्मीलनयुक्त्यैव विश्वमुन्मीलति क्षणात् ।
तामभीष्टफलोदारकल्पवल्लीं शिवां भजे ।२३७।

रक्षणीयं वर्धनीयं बहुमूल्यमिदं प्रभो ।
संसारदुर्गतिहरं भवद्भक्तिमहाधनम् ।२३८।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करूणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।२३९।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करूणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ।२४०।

प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चण्डघण्डीति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायिनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्
नवमं सिद्धिदात्रीति नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ।२४१।

सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥३॥
ॐ बीजत्रयाय विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि,
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥३॥

अथ भवानी नामसहस्र पाठे आरम्भः ॥



इति भवानी सहस्रनाम पाठे सम्पूर्णम् ॥

अथ इन्द्राची स्तोत्र पाठे आरम्भः ।

इति इन्द्राची स्तोत्र पाठे सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीरत्नमालाख्या देवीस्तुतिः

अथ शारिकास्तुति :-

बीजैः सप्तभिरूज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्हित् ।
काश्मीरप्रवरेशमध्यनगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्री शारिका पातुनः ॥

जय भगवति विन्ध्यवासिनि कैलासवासिनि श्मशानवासिनि हुङ्कारिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमारमातः गोविन्दभगिनि शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजङ्गवल्लमण्डिते केयूरहाराभरणेऽजय खड्गत्रिशूलडमरूमुद्गरस्रुवकफलशरचापवराऽभयपाशपुस्तक कपालखट्वाङ्ग गदामुसुलतोमरचक्रहस्ते कृपापरे प्रभूतविविधायुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेशे ब्रह्माणि

रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि दिव्यतपोविधायिनि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि विश्वकर्त्रि समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपे कैवल्ये शिवे निराश्रये निरूपाधिमये निरामयपदे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरनमिते मोहिनि तोषिणि भयंकरनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि काले कालकिंकरमथिनि कालाग्निशिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिंहस्थे योगरते योगेश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रियकारिणि दुर्गे दुर्जये हिरण्ये शरण्ये कुरु मां दयाम् ॥

प्रद्युम्नशिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम् ।
पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥
अमा माऽवतु कामा च चार्वङ्गी टङ्कधारिणी ।
तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शारिकाष्टमी ॥

॥ इति श्रीशारिकास्तोत्रम् ॥

॥ अथ शङ्कराचार्यकृता सौन्दर्यलहरी ॥

ॐ नमश्चिच्छक्त्यै ॥

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥ १ ॥

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः संचिन्वन् विरचयति लोकानविकलम् ।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां
हरः संक्षुद्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम् ॥ २ ॥

अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी
जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दस्रुतिझरी ।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवती ॥ ३ ॥

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥ ४ ॥

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥ ५ ॥

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखा
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः ।
तथाप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-
मपाङ्गात् ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ॥ ६ ॥

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना ।
धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ॥ ७ ॥

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥ ८ ॥

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ।

मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ॥ ९ ॥

सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः ।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि । १० ।

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शंभोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय
त्रिरेखाभिःसार्धं तव शरणकोणाः परिणताः । ११ ।

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् । १२ ।

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
तवापङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः ।

गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचया
हठात् त्रुट्यत्काञ्चयो विगलितदुकूला युवतयः ।१३।

क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले ।
दिवि द्विःषट्त्रिंशन्मनसि च चतुःषष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ।१४।

शरज्ज्योत्स्नाशुभ्रां शशियुतजटाजूटमकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकघुटिकापुस्तककराम् ।
सकृन्नत्वां नत्वा कथमिव सतां संनिदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणा भणितयः ।१५।

कवीन्द्राणां चेतःकमलवनबालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी-
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ।१६।

तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीधरणिभि-
र्दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां स्मरति यः ।

भवन्स्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः ।१७।

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्‌ यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम् ।१८।

किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः ।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधासारसिरया ।१९।

तडिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम् ।
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम् ।२०।

सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि-
र्वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि संचिन्तयति यः ।
स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिसुभगै-
र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ।२१।

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः ।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमकुटनीराजितपदाम् ।२२।

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शंभोरपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।
यदेतत् त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमकुटम् ।२३।

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
तिरस्कुर्वन्नेतत् स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ।
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव-
स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ।२४।

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
भवेत् पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता ।
तथा ह त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ।२५।

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम् ।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि संमीलति दृशां
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ।२६।

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ।२७।

ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदृशी-
ममन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति ।

तवास्मिन् मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन् मज्जीवः करणचरणः षट्चरणताम् ।२८।

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः ।
करालं यत् क्ष्वेलं कवलितवतः कालकलना
न शंभोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ।२९।

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम् ।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ।३०।

चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसंधाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः ।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ।३१।

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ।३२।

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनो-
र्निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः ।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः ।३३।

शरीरं त्वं शम्भोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम् ।
अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः संबन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः ।३४।

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।

त्वमेव स्वात्मानं परिणामयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन विभृषे ।३५।

तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शंभुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता ।
यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरातङ्के लोको निवसति हि भालोकभवने ।३६।

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम् ।
ययोः कान्त्या यान्त्या शशिकिरणसारूप्यसरणिं
विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती ।३७।

समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति-
र्यदादत्ते दोषाद् गुणमखिलमद्भ्यः पय इव ।३८।

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम् ।
यदालोके लोकान् दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा यद्दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति ।३९।

तडित्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम् ।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम् ।४०।

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम् ।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम् ।४१।

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः ।

स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुःशौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् ।४२।

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरूम्बं तव शिवे ।
यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन् मन्ये वलमथनवाटीविटपिनाम् ।४३।

वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
द्विषां बृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ।
तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः ।४४।

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम् ।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ।४५।

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यद्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम् ।
विपर्यासन्यासादुभयमपि संभूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः ।४६।

भ्रुवौ भुग्ने किंचिद् भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम् ।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे ।४७।

अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया ।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते संध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ।४८।

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधाराधारा किमपि मधुरा भोगवतिका ।

अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ।४६।

कवीनां सन्दर्भस्त[redacted]मकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम् ।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरला-
वसूयासंसर्गादलिकनयनं किंचिदरुणम् ।५०।

शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती ।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजयिनी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिः सकरुणा ।५१।

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले ।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ।५२।

विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते ।
पुनः स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजः सत्त्वं बिभ्रत् तम इति गुणानां त्रयमिव ।५३।

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि संभेदमनघम् ।५४।

तवापर्णे कर्णेजपनयनपैशुन्यचकिता
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाः शफरिकाः ।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ।५५।

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ।

त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः

परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ।५६।

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा

दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।

अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता

वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ।५७।

अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये

न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।

तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लंङ्घ्य विलस-

न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसंधानधिषणाम् ।५८।

स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलितताटङ्कयुगलं

चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम् ।

यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं

महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ।५९।

सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम् ।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ।६०।

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम् ।
वहन्नन्तर्मुक्ताः शिशिरतरनिश्वासघटिताः
समृद्ध्या यस्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ।६१।

प्रकृत्यारक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता ।
न बिम्बं त्वद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव न लज्जेत कलया ।६२।

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा ।

अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया ।६३।

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा ।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ।६४।

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभि-
र्निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः ।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकला
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ।६५।

विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पुररिपो-
स्त्वयारब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने ।
त्वदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ।६६।

कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया ।
करग्राह्यं शंभोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथंकारं ब्रूमस्तव चिबुकमौपम्यरहितम् ।६७।

भुजाश्लेषान् नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम् ।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो हारलतिका ।६८।

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः ।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ।६९।

मृणालीमृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवः स्तौति वदनैः ।

नखेभ्यः संत्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपो-
श्चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ।७०।

नखानामुद्द्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां
कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे ।
कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारुणदलम् ।७१।

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम् ।
यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ।७२।

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न संदेहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसंगमरसौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ।७३।

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम् ।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तः शबलितां
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते ।७४।

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयःपारावारः परिवहति सारस्वत इव ।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्-
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता ।७५।

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः ।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ।७६।

यदेतत् कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किंचिज्जननि तव तद्भाति सुधियाम् ।

विमर्दादन्योऽन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम् ।७७।

स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता-
निजावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः ।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ।७८।

निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्तेर्नाभौ वलिषु शनैस्त्रुटच्यत इव ।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थस्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये ।७९।

कुचौ सद्यःस्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता ।
तव त्रातुं भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ।८०।

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजा-
न्नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे ।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च ।८१।

करीन्द्राणां शुण्डाः कनककदलीकाण्डपटली-
मुभाभ्यामूरूभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवती ।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विजिग्ये जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमपि ।८२।

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत ।
यदग्रे दृश्यन्ते दश शरफलाः पादयुगली-
नखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः ।८३।

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ ।

ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ।८४।

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणं निशि च परभागे च विशदौ ।
परं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ।८५।

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयो-
स्तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते ।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ।८६।

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते ।
चिरादन्तःशल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा ।८७।

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीखर्परतुलाम् ।
कथंचिद्बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ।८८।

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसंकोचशशिभि-
स्तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ ।
फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ।८९।

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम् ।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
यदाधत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम् ।९०।

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनस-
श्चरन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति ।

स्वविक्षेपे शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-

च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते ।६१।

अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते

शिरीषाभा गात्रे दृषदिव कठोरा कुचतटे ।

भृशं तन्वी मध्ये पृथुरपि वरारोहविषये

जगत् त्रातुं शंभोर्जयति करुणा काचिदरुणा ।६२।

पुरारातेरन्तःपुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः

सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा ।

तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां

तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः ।६३।

समानीतः पद्भ्यां मणिमुकुरतामम्बरमणि-

र्भयादास्यादन्तःस्तिमितकिरणश्रेणिमसृणः ।

दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं

निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्केरुहमिव ।६४।

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः ।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् ।९५।

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम् ।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ।९६।

कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः ।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ।९७।

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितो
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः ।

किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतो
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ।९७।

गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम् ।
तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिःसीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ।९९।

समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारु हसितं
कटाक्षे कन्दर्पाः कतिचन कदम्बद्युति वपुः ।
हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्ति स्म विमला
भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे ।१००।

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा ।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ।१०१

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे

निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये ।

नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे

निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् ।१०२।

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः

सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना ।

स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं

त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम् ।१०३।

॥ इति श्रीसौन्दर्यलहरीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



पुष्णान्देवानमृतविसरैरिन्दुमास्राव्य सम्य-
ग्भाभिः स्वाभी रसयति रसं यः परं नित्यमेव ।
क्षीणं क्षीणं पुनरपि च तं पूरयत्येवमीदृ-
ग्दोलालीलोल्लसितहृदयं नौमि चिद्भानुमेकम् ॥

एतदावेशवैवश्यप्रोन्मिषद्धिषणा वयम् ।
विमृशामो मनाक्छ्रीमत्साम्बपञ्चाशिकास्तुतिम् ॥

साम्बपञ्चाशिका

शब्दार्थत्वविवर्तमानपरमज्योतीरुचो गोपते
रुद्गीथोऽभ्युदितः पुरोऽरुणतया यस्य त्रयीमण्डलम् ।
भास्वद्वर्णपदक्रमेरिततमः सप्तस्वराश्वैर्वियद्-
द्दिव्यास्यन्दनमुन्नयन्निव नमस्तस्मै परब्रह्मणे ।१।

ओमित्यन्तर्नदति नियतं यः प्रतिप्राणि शब्दो
वाणी यस्मात्प्रसरति परा शब्दतन्मात्रगर्भा
प्राणापानौ वहति च समौ यो मिथो ग्रासंसक्तौ
देहस्थं तं सपदि परमादित्यमाद्यं प्रपद्ये ।२।

यस्त्वक्चक्षुःश्रवणरसनाघ्राणपाण्यङ्घ्रिवाणी-
पायूपस्थस्थितिरपि मनोबुद्ध्यहंकारमूर्तिः ।
तिष्ठत्यन्तर्बहिरपि जगद्भासयन्द्वादशात्मा
मार्तण्डं तं सकलकरणाधारमेकं प्रपद्ये ।३।

या सा मित्रावरुणसदनादुच्चरन्ती त्रिषष्टिं
वर्णानत्र प्रकटकरणैः प्राणसङ्गात्प्रसूतान् ।
तां पश्यन्तीं प्रथममुदितां मध्यमां बुद्धिसंस्थां
वाचं वक्त्रे करणविशदां वैखरीं च प्रपद्ये ।४।

ऊर्ध्वाधःस्थान्यतनुभुवनान्यन्तरा संनिविष्टा
नानानाडिप्रसवगहना सर्वभूतान्तरस्था ।
प्राणापानग्रसननिरतैः प्राप्यते ब्रह्मनाडी
सा नः श्वेता भवतु परमादित्यमूर्तिः प्रसन्ना ।५।

न ब्रह्माण्डव्यवहितपथा नातिशीतोष्णरूपा
नो वा नक्तंदिवगममितातापनीयापराहुः ।

वैकुण्ठीया तनुरिव रवे राजते मण्डलस्था
सा नः श्वेता भवतु परमादित्यमूर्तिः प्रसन्ना ।६।

यत्रारूढं त्रिगुणवपुषि ब्रह्म तद्बिन्दुरूपं
योगीन्द्राणां यदपि परमं भाति निर्वाणमार्गः
त्रय्याधारः प्रणव इति यन्मण्डलं चण्डरश्मे-
रन्तः सूक्ष्मं बहिरपि बृहन्मुक्तयेऽहं प्रपन्नः ।७।

यस्मिन्सोमः सुरपितृनरैरन्वहं पीयमानः
क्षीणः क्षीणः प्रविशति यतो वर्धते चापि भूयः
यस्मिन्वेदा मधुनि सरघाकारवद्भान्ति चाग्रे
तच्चण्डांशोरमितममृतं मण्डलस्थं प्रपद्ये ।८।

ऐन्द्रीमाशां पृथुकवपुषा पूरयित्वा क्रमेण
क्रान्ताः सप्त प्रकटहरिणा येन पादेन लोकाः
कृत्वा ध्वान्तं विगलितबलिव्यक्ति पातालल्लीनं
विश्वालोकः स जयति रविः सत्त्वमेवोर्ध्वरश्मिः ।९।

ध्यात्वा ब्रह्म प्रथममतनु प्राणमूले नदन्तं
दृष्ट्वा चान्तः प्रणवमुखरं व्याहृतीः सम्यगुक्त्वा ।
यत्तद्वेदे तदिति सवितुर्ब्रह्मणोक्तं वरेण्यं
तद्भर्गाख्यं किमपि परमं धामगर्भं प्रपद्ये ।१०।

त्वां स्तोष्यामि स्तुतिभिरिति मे यस्तु भेदग्रहोऽयं
सैवाविद्या तदपि सुतरां तद्विनाशाय युक्तः ।
स्तौम्येवाहं त्रिविधमुदितं स्थूलसूक्ष्मं परं वा
विद्योपायः पर इति बुधैर्गीयते खल्वविद्या ।११।

योऽनाद्यन्तोऽप्यतनुरगुणोऽणोरणीयान्महीया-
न्विश्वाकारः सगुण इति वा कल्पनाकल्पिताङ्गः ।
नानाभूत प्रकृतिविकृतीर्दर्शयन्भाति यो वा
तस्मै तस्मै भवतु परमादित्य नित्यं नमस्ते ।१२।

तत्त्वाख्याने त्वयि मुनिजनाः नेति नेति ब्रुवन्तः
श्रान्ताः सम्यक्त्वमिति न च तैरीदृशो वेति चोक्तः ।

तस्मात्तुभ्यं नम इति वचोमात्रमेवास्मि वच्मि
प्रायो यस्मात्प्रसरति तरां भारती ज्ञानगर्भा ।१३।

सर्वाङ्गीणः सकलवपुषामन्तरे योऽन्तरात्मा
तिष्ठन्काष्ठे दहन इव नो दृश्यसे युक्तिशून्यैः ।
यश्च प्राणारणिषु नियतैर्मथ्यमानासु सद्भि-
र्दृश्यं ज्योतिर्भवसि परमादित्य तस्मै नमस्ते ।१४।

स्तोता स्तुत्यः स्तुतिरिति भवान्कर्तृकर्मक्रियात्मा
क्रीडन्येकस्तव नुतिविधावस्वतन्त्रस्ततोऽहम् ।
यद्वा वच्मि प्रणयसुभगं गोपते तच्च तथ्यं
त्वत्तो ह्यन्यत्किमिव जगतां विद्यते तन्मृषा स्यात् ।१५।

ज्ञानं नान्तःकरणरहितं विद्यतेऽस्मद्विधानां
त्वं चात्यन्तं सकलकरणागोचरत्वादचिन्त्यः ।
ध्यानातीतस्त्वमिति न विना भक्तियोगेन लभ्य-
स्तस्माद्भक्तिं शरणममृतप्राप्तयेऽहं प्रपन्नः ।१६।

हार्दं हन्ति प्रथममुदिता या तमः संश्रितानां
सत्त्वोद्रेकात्तदनु च रजः कर्मयोगक्रमेण ।
स्वभ्यस्ता च प्रथयतितरां सत्त्वमेव प्रपन्ना
निर्वाणाय व्रजति शमिनां तेऽर्क भक्तिस्त्रयीव ।१७।

तामासाद्य श्रियमिव गृहे कामधेनुं प्रवासे
ध्वान्ते भातिं धृतिमिव वने योजने ब्रह्मनाडिम् ।
नावं चास्मिन्विषमविषयग्राहसंसारसिन्धौ
गच्छेयं ते परमममृतं यत्र शीतं न चोष्णम् ।१८।

अग्नषोमौवखिलजगतः कारणं तौ मयूखैः
सर्गादाने सृजसि भगवन्ह्रासवृद्धिक्रमेण ।
तावेवान्तर्विषुवति समौ जुह्वतामात्मवह्नौ
द्वावप्यस्तं नयसि युगपन्मुक्तये भक्तिभाजाम् ।१९।

स्थूलत्वं ते प्रकृतिगहनं नैव लक्ष्यं ह्यनन्तं
सूक्ष्मत्वं वा तदपि सदसद्व्यक्त्यभावादचिन्त्यम् ।

ध्यायामीत्थं कथमविदितं त्वामनाद्यन्तमन्त-
स्तस्मादर्क प्रणयिनि मयि स्वात्मनैव प्रसीद ।२०।

यत्तद्वेद्यं किमपि परमं शब्दतत्त्वं त्वमन्त-
स्तत्सद्व्यक्तिं जिगमिषु शनैर्लाति मात्रा कलाः स्वे ।
अव्यक्तेन प्रणववपुषा बिन्दुनादोदितं स-
च्छब्दब्रह्मोच्चरति करणव्यञ्जितं वाचकं ते ।२१।

प्रातःसंध्यारुणकिरणभागृङ्मयं राजसं य-
न्मध्ये चापि ज्वलदिव यजुः शुक्लभाः सात्त्विकं वा ।
सायं सामास्तमितकिरणं यत्तमोल्लासि रूपं
साह्नः सर्गस्थितिलयविधावाकृतिस्ते त्रयीव ।२२।

ये पातालोदधिमुनिनगद्वीपलोकाधिबीज-
च्छन्दोभूतस्वरमुखनदत्सप्तसप्तिं प्रपन्नाः ।
ये चैकाश्वं निरवयववाग्भावमात्राधिरूढं
ते त्वामेव स्वरगुणकलावर्जितं यान्त्यनश्वम् ।२३।

दिव्यं ज्योतिःसलिलपवनैः पूरयित्वा त्रिलोकी-
मेकीभूतं पुनरपि च तत्सारमादाय गोभिः ।
अन्तर्लीनो विशसि वसुधां तद्गतः सूयसेऽन्नं
तच्च प्राणांस्त्वमिति जगतां प्राणभृत्सूर्य आत्मा ।२४।

अग्नीषोमौ प्रकृतिपुरुषौ बिन्दुनादौ च नित्यौ
प्राणापानावपि दिननिशे ये च सत्यानृते द्वे
धर्माधर्मौ सदसदुभयं योऽन्तरावेश्य योगी
वर्तेतात्मन्युपरतमतिर्निर्गुणं त्वां विशेत्सः ।२५।

गर्भाधानप्रसवविधये सुप्तयोरिन्दुभासा
सापत्न्येनाभिमुखमिव खे कान्तयोर्मध्यसंस्थः ।
द्यावापृथ्व्योर्वदनकमले गोमुखैर्बोधयित्वा
पर्यायेणापिबसि भगवन्षड्रसास्वादलोलः ।२६।

सोमं पूर्णामृतमिव चरुं तेजसा साधयित्वा
कृत्वा तेनानलमुखजगत्तर्पणं वैश्वदेवम् ।

आमावस्यं विघसमिव खे तत्कलाशेषमश्नन्
ब्रह्माण्डान्तर्गृहपतिरिव स्वात्मयागं करोषि ।२७।

कृत्वा नक्तंदिनमिव जगद्बीजमाव्यक्तिकं य-
त्तत्रैवान्तर्दिनकर तथा ब्राह्ममन्यत्ततोऽल्पम् ।
दैवं पित्र्यं क्रमपरिगतं मानुषं चाल्पमल्पं
कुर्वन्कुर्वन्कलयसि जगत्पञ्चधावर्तनाभिः ।२८।

तत्त्वालोके तपन सुदिने ये परं संप्रबुद्धाः
ये वा चित्तोपशमरजनीयोगनिद्रामुपेताः ।
तेऽहोरात्रोपरमपरमानन्दसंध्यासु सौरं
भित्त्वा ज्योतिः परमपरमं यान्ति निर्वाणसंज्ञम् ।२९।

आब्रह्मेदं नवमिव जगज्जङ्गमस्थावरान्तं
सर्गे सर्गे विसृजसि रवे गोभिरुद्रिक्तसोमैः ।
दीप्तैः प्रत्याहरसि च लये तद्यथायोनि भूयः
सर्गान्तादौ प्रकटविभवां दर्शयन्रश्मिलीलाम् ।३०।

श्रित्वा नित्योपचितमुचितं ब्रह्मतेजःप्रकाशं
रूपं सर्गस्थितिलयमुचा सर्वभूतेषु मध्ये ।
अन्तेवासिष्विव सुगुरुणा यः परोक्षः प्रकृत्या
प्रत्यक्षोऽसौ जगति भवता दर्शितः स्वात्मनात्मा ।३१।

लोकाः सर्वे वपुषि नियतं ते स्थितास्त्वं च तेषा-
मेकैकस्मिन्युगपदगुणो विश्वहेतोर्गुणीव ।
इत्थंभूते भवति भगवन्न त्वदन्योऽस्मि सत्यं
किन्तु ज्ञस्त्वं परमपुरुषोऽहं प्रकृत्यैव चाज्ञः ।३२।

संकल्पेच्छाद्यखिलकरणप्राणवाण्यो वरेण्याः
संपन्ना मे त्वदभिनवनाज्जन्म चेदं शरण्यम् ।
मन्ये चास्तं जिगमिषु शनैः पुण्यपापद्वयं त-
द्भक्तिश्रद्धे तव चरणयोरन्यथा नो भवेताम् ।३३।

सत्यं भूयो जननमरणे त्वत्प्रपन्नेषु न स्त-
स्तत्राप्येकं तव नुतिफलं जन्म याचे यदित्थम् ।

त्रलोक्येशः शम इव परः पुण्यकार्योऽप्ययोनिः
संसाराब्धौ प्लव इव जगत्तारणाय स्थिरः स्याम् ।३४।

सौषुम्णेन त्वममृतपथेनैत्य शीतांशुभावं
पुष्णास्यग्रे सुरनरपितॄन् शान्तभाभिः कलाभिः
पश्चादम्भो विशसि विविधाश्चौषधीस्तद्गतोऽपि
प्रीणास्येवं त्रिभुवनमतस्ते जगन्मित्रतार्क ।३५।

मन्दाक्रान्ते तमसि भवता नाथ दोषावसाने
नान्तर्लीना मम मतिरियं गाढनिद्रां जहाति ।
तस्मादस्तंगमिततमसा पद्मिनीवात्मभासा
सौरीत्येषा दिनकर परं नीयतामाशु बोधम् ।३६।

येन ग्रासीकृतमिव जगत्सर्वमासीत्तदस्तं
ध्वान्तं नीत्वा पुनरपि विभो तद्दयाघ्रातचित्तः ।
धत्से नक्तंदिनमपि गती शुक्लकृष्णे विभज्य
त्राता तस्मात्भव परिभवे दुष्कृते मेऽपि भानो ।३७।

आसंसारोपचितसदसत्कर्मबन्धाश्रितानां-
माधिव्याधिप्रजननमरणक्षुत्पिपासार्दितानाम् ।
मिथ्याज्ञानप्रबलतमसा नाथ चान्धीकृतानां
त्वं नस्त्राता भव करुणया यत्र तत्र स्थितानाम् ।३८।

सत्यासत्यस्खलितवचसां शौचलज्जोज्झिताना-
मज्ञानानामफलसफलप्रार्थनाकातराणाम् ।
सर्वावस्थास्वखिलविषयाभ्यस्तकौतूहलानां
त्वं नस्त्राता भव पितृतया भोगलोलार्भकाणाम् ।३९।

यावद्देहं जरयति जरा नान्तकादेत्य दूती
नो वा भीमस्त्रिफणभुजगाकारदुर्वारपाशः ।
गाढं कण्ठे लगति सहसा जीवितं लेलिहान-
स्तावद्भक्ताभयद सदयं श्रेयसे नः प्रसीद ।४०।

विश्वप्राणग्रसनरसनाटोपकोपप्रगल्भं
मृत्योर्वक्त्रं दहननयनोद्दामदंष्ट्राकरालम् ।

यावद्दृष्ट्वा व्रजति न भिया पञ्चतामेष काय-
स्तावन्नित्यामृतमय रवे पाहि नः कान्दिशीकान् ।४१।

शब्दाकारं वियदिव वपुस्ते यजुःसामधाम्नः
सप्तच्छन्दांस्यपि च तुरगा ऋङ्मयं मण्डलं च
एवं सर्वश्रुतिमयतया मद्दयानुग्रहाद्वा
क्षिप्रं मत्तः कृपणकरुणाक्रन्दमाकर्णयेमम् ।४२।

नाशं नास्मच्चरणशरणा यान्त्यपि ग्रस्यमानाः
दैवैरित्थं सितमिव यशो दर्शयन्स्त्वं त्रिलोक्याम् ।
मन्ये सोमं क्षततनुममागर्भवृद्धया विवस्व-
ञ्शुक्लच्छायां नयसि शनकैः स्वां सुषुम्णांशुभासा ।४३।

आस्तां जन्मप्रभृति भवतः सेवनं तद्धि लोके
वाच्यं केनापरिमितफलं भुक्तिमुक्तिप्रकारम् ।
ज्योतिर्मात्रं स्मृतिपथमितो जीवितान्तेऽपि भास्व-
न्निर्वाणाय प्रभवसि सतां तेन ते कः समोऽन्यः ।४४।

अप्रत्यक्षं त्रिदशभजनाद्यत्परोक्षं फलं त-
त्पुंसां युक्तं भवति हि समं कारणेनैव कार्यम् ।
प्रत्यक्षस्त्वं सकलजगतां यत्समक्षं फलं मे
युष्मद्भक्तेः समुचितमतस्तत्त याचे यथा त्वाम् ।४५।

ये चारोग्यं दिशति भगवान्सेवितोऽप्येवमाहु-
स्ते तत्त्वज्ञा जगति सुभगा भोगयोगप्रधानाः ।
भुक्तेर्मुक्तेरपि च जगतां यच्च पूर्णं सुखानां
तस्यान्योऽर्कादमृतवपुषः को हि नामास्तु दाता ।४६।

हित्वा हित्वा गुरुचपलतामप्यनेकान्निजार्था-
न्यैरकार्थीकृतमिव भवत्सेवनं मत्प्रियार्थम् ।
तेषामिच्छाम्युपकृतिमहं स्वेन्द्रियाणां प्रियाणा-
मादौ तस्मान्मम दिनपते देहि तेभ्यः प्रसादम् ।४७।

किं तन्नामोच्चरति वचनं यस्य नोच्चारकस्त्वं
किं तद्वाच्यं सकलवचसां विश्वमूर्ते न यत्त्वम् ।

तस्मादुक्तं यदपि तदपि त्वन्नुतौ भक्तियोगा-
दस्माभिस्तद्भवतु भगवंस्त्वत्प्रसादेन धन्यम् ।४८।

या पन्थानं दिशति शिशिराद्युत्तरं देवयानं
या वा कृष्णं पितृपथमथो दक्षिणं प्रावृडाद्यम् ।
ताभ्यामन्या विषुवदभिजिन्मध्यमा कृत्यशून्या
धन्या काचित्प्रकृतिपुरुषावन्तरा मेऽस्तु वृत्तिः ।४६।

स्थित्वा किञ्चिन्मन इव पिबन्सेतुबन्धस्य मध्ये
प्राप्योपेयं ध्रुवपदमथो व्यक्तमुद्दाल्य तालु ।
सत्यादूर्ध्वं किमपि परमं व्योम सोमाग्निशून्यं
गच्छेयं त्वां सुरपितृगती चान्तरा ब्रह्मभूतः ।५०।

सर्वात्मत्वं सवितुरिति यो वाङ्मनःकायबुद्ध्या
रागद्वेषोपशमसमतायोगमेवारुरुक्षुः ।
धर्माधर्मग्रसनरशनामुक्तये युक्तियुक्तां
स श्रीसाम्बः स्तुतिमिति रवेः सुप्रशान्तां चकार ।५१।

भक्तिश्रद्धाद्यखिलतरुणीवल्लभेनेदमुक्तं
श्रीसाम्बेन प्रकटगहनं स्तोत्रमध्यात्मगर्भम् ।
यः सावित्रं पठति नियतं स्वात्मवत्सर्वलोका-
न्पश्यन्सोऽन्ते व्रजति शुकवन्मण्डलं चण्डरश्मेः ।५२।

इति परमरहस्यश्लोकपञ्चाशदेषा
तपननवनपुण्या सागमब्रह्मचर्चा ।
हरतु दुरितमस्मद्वर्णिताकर्णिता वो
दिशतु च शुभसिद्धिं मातृवद्भक्तिभाजाम् ।५३।

श्रीस्वात्मसंविदभिन्नरूपशिवार्पणमस्तु
समाप्तं चेदं साम्बपञ्चाशिकाशास्त्रम्



Key to pronounciation of vowels peculiar to Kashmiri

Note I :-

न stands for अ, उ, or any consonant

न' – as in न'व घ'र (new watch)

ना' – as in सा'री आ'स्स (all were)

ऩ – as in च़ त़ ज़ सच़ you and two tailors

नू़ – as in तू़रि सू़त्य (with cold)

नु' – as in सु'न त़ रू'प (gold & silver)

नु) – as in .ज़ु)र त़ कु)ल (deaf & dumb)

Note 2 :-

the last consonant is without its अ (मन = मन)

॥ अथ ध्यानम् ॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पुण्ये ब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणि स्वर्गमार्गे ।
प्रायश्चितं परं नस्तव जलकणिका ब्रह्महत्याद्यघानां
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥

[स्वर्गीयरामानन्दस्वामिना कश्मीरीभाषायां विरचिता गङ्गास्तुति]

हर हरै करो अच्छयनुइ हा नरो
हर मुख' द्रायि भङ्गा सदा शिव स्वरूप

शाः हर गङ्गाये वति ह्यशाम पकुन
लोलै शिव सुन्दे ओमुइ ह्यो जपुन
क्षण' क्षण' रात तै द्यन मन सोवनस न थकुन
॥ हर मुख' ॥१॥

मन' दीव गण'पतइ डीढ़वोन्य शिव सुन्धुइ
लयि वारै अनुन अद. बनि पकुनुइ
सु लये यलि यिवै छुनः कठिनुइ ॥ हर मुख' ॥२॥

व्यचार नाग जलै तन नाव शाहः हरै
पुण्य पाप प'त्य अवन विषय वासना इन्द्रियै
पापन त. शापन क्षयै यस. स्नान व्यचारइ ॥ हर मुख' ॥३

च. यि लयि बागस़इ सहज़ पोश वुछु सु अचल
सु वु)रुइ पान. शिवन यस स्वमनि गनि स्वकल
जय जय कार त़मिस जन्म गोस स्वफल ।।हर मुख'।।४

ओं भूर्भुवः स्वः त्र' गुण त्र' कारण
अकार भूर्लूक ब्रह्मा रजोगुण सृष्टि कारण
ज़ागृत स्थूल शरीर कर्म भूमि .दपन ।।हर मुख'।।५

उकार विष्णु भुवः सत्तोगुण स्थितः कारण
स्वपुन ह्यथ सूक्ष्म़ शरीर गव. त़मि कुइ लक्षण
अकार उकारुक सपुतुइ निरूपन ।। हर मुख' ।।६

मकार स्वः रुद्र रूपइ तम़ समहार कारण
सुषुप्ति कारण शरीर ल़इ उद्भव यति तिमन
नाद बिन्द मोक्ष' पदइ' तुरिया कारण ऩ कारण ।। हर मुख' ।।७

ओम् भूरहेर स्थूल शरीर मनुष्य दिह मोक्ष' पदस
कर्म भूमि यि शरीर त़स़ ति सय्द्ध यस यि मनस
निष्काम सय्द्ध मोक्षस़ स्वकाम सय्द्ध स्वर्ग भोगस ।। हर मुख'।।८

स्वर्ग भोग राज़ बरुन क्षण़ मा'त्रुक स्वपुन
स्वकाम गयि यछ़. त़मिच' यमि किऩ ज़यु)ऩ त़ मरु)न
इन्द्रियन् पूठरावुन परतन्त्ऱ बनुऩ ।। हर मुख' ।।९

स्नान सुइ मल कासइ' परतन्त्र म. आसइ'
निष्काम मोक्ष धर्म इन्द्रियै सङ्ग वर्जइ'
हर मुख' गङ्गा ध्यान स्वरु गुरु वति प़कइ ।।हर मुख'।।१०

स्वातन्त्र्य भा'वस पा'न्दह छिय़् वलिश्र
युक्ति रुंगिल्लइ रोज़न् तिम् द.ह्. रिन्द. शमिथ
भ्यि हा भ्य् वनुइ द्वदरहामि रोज़ त्रिथ ॥हर मुख'॥११

द्वदर होम देह त् मनइ भ्य ना' द्दष्टि मा'नइ
स्वरसै लज़िम्य् फुलै सत्यम् सत् जा'नइ
स्वगन्ध विमर्षइ' वैखरी नेरानइ ॥हर मुख'॥१२

गन्ध ह्यो स्वगन्धस कन द्यू वा'निये
षोड्शी सरस्वती चित् विमर्ष रूप द्राये
छै वखनानइ मो गछ देह छा'ये ॥हरमुख'॥१३

परा रूपी स्वय् शिवस ज़ा'न वनी
पश्यन्ती रूपी विमर्ष करवनी
मद्य.मा रूप द'रिथ् सम्बन्ध गन्डवनी ॥हर मुख'॥१४

माव यु)द शिव सुन्दुइ लोलइ वन्दि च्ये छुमि,
देह तै मन् बुद्धइ' अर्पन करु सुइ
द्वय स्वय् यलि गले दिइ हर दशुंनुइ ॥हर मुख'॥१५

पशि भा'व मशरा'वख् देह. द्दष्ट पु)त चानख्
च्यत् .चैतन्य रूपी जुत्र उद्वय् शिव ज़ानख
भक्ति लोलै भज़ाव ओम् अलक्ष् अलक्ष् ॥हर मुख'॥१६

छुम गाह. द्वरिबलै शाहः हर शाह:पोरे
रव् जन् प्रव' आवा'न हर मुख' मन्दोरे,
स्वप्रकाश अविना'शी युस न् नर ज़ान्ह. सोरे ॥हर मुख'॥१७

छुन' नर' तार सिन्ध्ये विना मनुष्य स़इ
मोक्ष़ द्वार नर' शरीर छुइ तस़ ज़ान यस़इ
युस वु)र पश़ुभावन नशि छऩ ज़ान तसइ ।हर मुख'।१८

मनुष्यस़ मनुष्य लक्ष़ण क्षण' [क्षण' हर' भज़न
मरन'चि थावि कल्पन स्वरि नाराण अछ्यन
मरि मु)र गव सु अमर काल़ स्यन्धि तारि म्ययन ।हर मुख'।१९

यस मनुष्यस न भज़न तस़ त़ पश़िस क्या बयन
इयी तस़ ती पश़िस भूज़िथ सर' क़रितन
कब व्यचार स्वरु' आत्मनि नारायण । हर मुख'।२०

यु)द वायिल' मनै सुलये लय़ क़रख
ग'तले मोहने य़व' भव स्यन्धि त़रख
स्वर वुऩ वा'र स्वरख स्वर सुइ सर' क़रख ।हर मुख'।२१

प्रङ्गस विहिथ'इ पानै शाहः हरइ
प्रङ्ग देह. शाहः हरइ आत्म दीव जुवुइ
च़ नरै चेनू चइ शिव चइ चैतन्य मूर्थइ ।हर मुख'।२२

क्रेन्क़ नदी स्नानइ स्यन्धि शाहः कु)लि कर
इडा पिङ्गला मिलौ सुशम्ना चइ स्वर
अमरावती सङ्गम सुइ गौव गयि अमर ।हर मुख'।२३

शुत्रशे छत्रमुलै त्रिविधा तप गवइ'
कायक वाचकइ' मानस़ तप गवइ'
यस़ तति दृढ़ भुवइ' टोठ़योव़ तस़ शिवइ' । हर मुख'।२४

शत्रङ वार' गलन विघ्नङ' पु)त अचन
लय विक्षेप कशाङ रसा स्वाद यथ दपन
बान चा'न्य योग अभ्यास अद' कति रु)ठ तिमन । हर मुख ।२५

भर्गो राम' रादन कुनुङ जुव भूतन
सर्वमय सर्वसाक्षी सूर्य ज़न दै लूकन
छम सु)राम आराधन यथ अलौकिक दपन । हर मुख ।२६

भ अर्थङ' छुस वनान वेदान्त सिद्धान्तङ'
देह त आत्मा प्रथक' जानि युस सुङ शान्तङ'
दुङ कास निशिपानस चेन सु चङ शिवनाथङ' । हर मुख ।२७

भ अर्थङ ना भ अर्थङ भूत काया जड़ङ
भ अर्थङ परमार्थङ' आत्मा छुस सु दड़ङ
भ अर्थङ सा'री गछित अद' सुअर्थङ सिद्धङ । हर मुख ।२७

दुङ पाश न'र चमङ मामस देह भ्रम'ङ
तति, लोर फ्रक त तमङ' थ्वख लोस चास दमङ'
हल' कर उद्यमङ' योग बल तति लमङ' ।हर मुख ।२९

आही मूर्खनङ' जा'न्य गाश वनि अनङ'
न'यिद, काजनङ युस कन्यन दर्शुनुङ
कनि देहादिकन साक्षी वुछतनङ । हर मुख ।३०

मोह गट' अज्ञानङ विवेक गाश आत्म जा'नङ
गट' गाश प'त्य चानङ फश दिथ त्राव बानङ

बान चेन योग ध्यानइ अद' शर नेरानइ । हर मुख ।३१

बरनि बल नेर वुनुइ' युस प'न्स'त्रावुनुइ
मायायि निशि गछुन्न दृष्टान्त सुइ वु)नुइ
हर मु'ख दर्शुनुइ अद' सन्मु'ख' छु ननुइ । हर मुख ।३२

बरनेवल' नेरुन मरनै मरि मरुन
सुय गव शिव स्वरुन छुन' यम' हेरि खसुन
यम' हेर क्था दपव कुम्भी पाक नरकस युन । हर मुख़ ।३३

माया मरगि महलिशे रोजु'न पशिनुइ
काल वाव' डोठइ तति पत' लार वुनुइ
सदा शिव स्वामी तति गछ्छि रछुनुइ । हर मुख ।३४

ब्रह्म सरै करु स्नान उाम पान स्वरइ
मल काम क्रोध लूम मोह मद् अहङ्कार मुवछइ
भ्रम' त्राव देह दृष्टि स्वप्रकाश ब्रह्म वुच्छिइ । हर मुख ।३५

खसवुन वस'वुनुइ हसंद्वार अ'श फेयर ज़इ
हा हू तु)त तुरुन नियथ स्नान करु सुह
च न ब ना' छुसुइ स्वर त शब्द ब्रह्मइ । हर मुख ।३६

का'ल्य सरै दीह गोम मन बु'द्ध वासना विषै
तति कति सन कालइ यति लय गै तिमइ
नुन्द कोल म्युल म्य तस सहजानन्द छुमइ । हर मुख ।३७।

गङ्गा तीर्थ करइ सहजानन्द भरइ
पान' मन्ज' पान स्वरइ सुइ गङ्गा तीर्थइ

स्नान सन्ध्या प्राणायाम श्राद सुइ पिण्ड व़ठइ । हर मुख ।३८

पिण्ड देह् वटइ ज़ान च् दीव वरिथ वटस
मण्डन कर वासना मन सुइ लब् पिण्ड अ्रण्डस
यस् य आसि मण्डन सुय गव परम हंस । हर मुख ।३९

सहज गङ्गायि यस स्नान तस प्यत्र मुक्तइ
कु'ल तारूक सुइ गव रूद न बु'नतस होंच्छुइ
अस्त्रकै वार' छ्यन' त्रा'वन देह दृष्टि । हर मुख ।४०

प्रदक्षरण गङ्गाये तस् इय क्षण क्षणै
युस गुरु शब्दस स'त्य रोजि बोजि स्वमनै
हर मु'ख क्षित्र सु पानै अति ओर क्या भ वनै । हर मुख । ४१

ह्यन्द व्यन्द पालेजस संसार विश्व रूपस
पोशि म् अति नमइ' स्वरु बोधेश्वरस
भूत'शरीर ग्च्छित अ्चू नाराण नागस । हर मुख ।४२

नाराण नागुक स्नान च्यन मय रोजुन ज़ान
तत् सतस थ्यथइ न्यत सुइ पाठ परान
अज्ञान गछि मुछुन वुछुन ब्रह्म ज्ञान ॥ हर मुख ।४३

असि निर्वाण ग्तइ आत्म तत् सतइ
तत्त्वम्' अस्य पद'च् व्यद हो छम वथइ
सरस्वती इय् छ. वनान शिव स'न्ज तति ग्थइ । हर मुख ।४४

असि ना' काह् छिन बल असि त्रुवहन् हुन्दुइ
तिम चवुह त्वत् बोज़य भूत उत्पत् मु)रुइ
गुणौ निशि द्राये भ् ना गुण छुसय । हर मुख ।४५

हायन गव सङ्गम लय स्थावर जङ्गम
स्वप्रकाश ह्यत पै दै सुइ सा'रिस्इ सम
शब्द विस्तार मै बोलान शिवोहम् । हर मुख ।४६

अस्य ब्रह्मस्य' निर्वाण निर्गुणइ'
अवृइ अक्षय' अक्रय' अगथइ'
अखण्डइ' अकथइ' अटल अनामइ' । हर मुख ।४७

गु)रइ पूर वनी व्यधइ छुन' नर युन् त् गछुन
यस बनि दीव प्रसाद तस् ओंठै छु युन
मनुष्य कोन' यिनस' तति दीवन छु नमुन । हर मुख ।४८

हर मु'ख भाव तमिस' पनुनुइ पानसइ
वर दियि महा प्रसाद थित दियि धर्मसयइ
ब्रह्म सूत्रन वखनान बिहिथ् थानसइ । हर मुख । ४९

शिव हरि रामानन्द ज़ान अभेद' कु'नुइ
अमूर्त अरूपइ' तत् स्वरूव वखनुइ'
गङ्गाइ द्पिथ' सहजु'क तीर्थ वुनुइ' । हर मुख । ५०

हर हरै करो अच्छ्यनइ हा नरो ।
हर मुख' द्रायि गङ्गा सदा शिव स्वरूप ।।

॥ अथ ध्यानम् ॥

गौरीश्वराय भुवनत्रयकारणाय
भक्तप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय ।
शर्वाय दुःखशमनाय वृषध्वजाय
रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय ॥

[स्वर्गीयगोविन्दस्वामिना कश्मीरीभाषायां विरचिता गुरुस्तुति]

शिव शङ्कर भव भय हर हर लगयो चरणन् ।
गुरु लगयो पादि कमलन सत् गुरु लगयो चरितन् ॥

चर'णन् तल' वार् वरतम् वरदा छुक शरणन्
शरणे च्इय आ'स का'सतम् मल् म्य अन्तः करणन्
क'र' शङ्कर' कर' रठहम कर' अर' हर' मरणम्
म'र' म'र' छुम् ज्यन' मरनुक अमरीश्वर भगवन्
पा'दि-कमलन् तल् म्य् पा'लतम् पालवुन छुक च् का'लहन
ह्न्य ह्न्य चई शिव ब् बच्छह'थ यव' दुइ गलि हन हन्
। शिव शङ्कर ।१।

दय' अद्वय द'इ म्य गच्छतम कर' दै दै निशिदयन्
दीन दयाल कन् म्य थावतम दीन वचनन् त् वदनन्

जर जर छुम ज्वज़रुनुकुइ ज़'र नावतम मत' हन्
हन ना'वन् हनना'वतम मन मुह युथ् मुनियन्
दीह पुष्ट मन तुष्ट थावतम दीव जुष्ट छुक दुष्टहन्
पा'न् ईश्वर पानै तोष्तम् पान् वन्दहै तोषरणन्

। शिव शङ्कर ।२।

अन्त कुस ज़ानि च्य् अनन्तस् सन्त' व्यस्रेइ चिन्तनन्
क्या निश्चय करि वेदान्ती यति वेद ल'गि् पन्थ्नन्
ब्रह्मादय्क ति गइ मूहस सत्व चोन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष' चई तत्व म्य भावतम बथ म्य हावतम जानन्न्
गत् छै सिद्ध शुद्ध' मूनियन सत्त छम शाप मूचनन्
शाप् मूच्न शान् लू'चन पा'रि आर्या लूचनन्

। शिव शङ्कर ।३।

तीजो रूप तीज़ चई छुख सूम् सूर्यन् त अग्नन्
तीजो रूप चई मा'सा'न बाह्य अन्तर यूगियन्
सो प्रकाशक स्वान् भवगम शान्त तीजा ज़'नियन्
शिव म्यति दित् कर्म सुम सयज़ जान इय्छ् ज़नकादय्कन्
ज़ान जानुन ज़ानिनी चई क्या ब् ज़ानि चा'नि ज़ानिव्यन्
ज्ञा'न् बु)पदीश वा'र' बरतम फ्र अज्ञनियान पटलन्

। शिव शङ्कर ।४।

निष्कारण सर्वकारण चई कारण कारणन्
त्रये कारणन् चई कारण सृष्ट स्थित् तँ प्रलयन्
चई कर्ता चई भर्ता चई हर्ता जगतन्
व्यपि व्यापक भाव व्य'पित चई निरन्तर भुवनन्

बुज़ि क्या वन' च़ ज़ि क्या छुख ग्रुस ऩ ज़ोन क'ङिस ज़ा निव्यन्
ज़ान सा'री च'नि दया च'नि कृपा भगवन्

। शिव शङ्कर ।५।

दीव पुज्य छुख दीव पूज़नीय पूजा व्यध पूज़नन्
विज़ि विज़ि बज़ि प़ज़ि पूजहथ यु'थ पूज़नख विष्णन्
भा'व भा'मन फु'ल न'विथ माल करहै कोसमन
बो स्व' मन' व्यऩ' लागहै म्यथि गु)न्द करहै कोमदन
सो वन्दि यच्छि पच्छि हन्दि पोश लागहै पाद' कमलन
पाद' कमलन तल म्य़ पालतम तल ह्यथ क्यथ विघ्नन्

। शिव शङ्कर ।६।

शुद्ध' निमल' शिव पूज़हथ यव़ सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध मन च्योन ध्यान द'रिथ शु'द्ध स्फाटिक व्यक़्सन
नीलकण्ठस छु हटि वासुक चित़ आत्मस़ तमोगन
सुधा धारा गङ्ग ह्यरि शेरि च्य्य़ तारवनि सुज्ञि नरकन
शिवा' द'रम़च वाम' भागस चित् शक्ति चित् आत्मन
धर्म रूप वृषभ़ वगि़ त्रिशूल त्र अवस्थाइ अथिसऩ

। शिव शङ्कर ।७

श्वेत सुन्दर छु)त भस्मा तनि प्रकटयोय सतोगन
रुण्ड माला गलि गण्डमच रु)श कुरुमुत इन्द्रियन
क्या छुय जटा मुकट शूमान छल' गुण्डमुत रज़ोगऩ
टियकि शा'यि ह्यरि डयकि चन्द्रम प्रकटयो च्योन शुद्ध मन

दियक़ वा'सन निवासन वा'स च्योन मनि सुमनन्
त् दाम छुख' ज्ञान् बु)ज तइ त कारूप त्रनयन्
। शिव शङ्कर ।८

मा'या' तीत' मा'या' चानि त्रिगुण सू.त्य व्यकसन
निगुण छुख गुण वुल्लङ्घित मा'या' गुण वु)लसन
भूत' मा'वत भूत पञ्चक दीह स्वर कु)र अहमन्
द'ह इन्द्रियै मन बुद्ध ह्यथ प्राण त्रल सू.त्य प्रच्रन्
सत चित् आनन्द रूप आत्मन् ज़ीव भावस कु)रशयन
तद आत्मा माव दिह के लूभ प्रकर'चबल जीवनन्
। शिव शङ्कर ।९।

मु'ह ज़ा'ल सू.त्य ज़ीव गण्ड़नै आ'व कर्म क्यन बन्धनन्
काम क्रूधन स्थित रटनस पियठ मनस बु)ज़ त् इन्द्रियन्
द्वन्द भा'वत राग द्वेष सू.त्य कापि लु)ग पट् शुत्रन्
गुण सङ्ग सू.त्य यथ गच्छ लु)ग पुण्य पाप वश ब'न्धज़न
मु)कज़ा'रुक पाइ चई शिव मूक्तिदा छुख च भक्तन्
भव बन्धन मु)कलावतम छूख च् भव ! भव भयहन्
। शिव शङ्कर ।१०।

निशप्रपञ्च च्योन सोरुइ प्रपञ्च वाञ्छ छ्‌म कस बर' कन्
वन च् क्या कर' चञ्चल मन' समसार क्यन खेञ्चलन्
ही हरी हर विरञ्च बोज़तम क्या वन' पञ्च दैवतन्

पञ्च वदन' मुकलावतम कँह उपाय छुम् न चार्ंनि व्यन्
कून' कून' कून' कुनुइ तोषतम कुनि अन्त छुइन् ह्यार बु)न्
रुति मुख सुख मुख वरतम गुख सुन्दर दुख हन्
। शिव शङ्कर ।११।

सु)म दितम सम्पदा यव सु)म रोज़हा समयन
सु)म यस गच्छि च'न्य दया लगि सु)म सय्ज कंमन
सम' सोमरस प्रथ् गुण किन समयन त् साधनन्
सु)म आहार सु)म व्यवहार सु)म निदरा त् जागरन
समब'लिथ पानस सु)म सु)म श्वर्ज़रिथ शायहन
लाग समाध योग' सु)म सय्ज़ विज़ सू.त्य गुरु वचनन्
। शिव शङ्कर ।१२।

भक्ति प्रिय भक्ति दायक दै युस यच्छह'न भक्तिजन
भक्ति भावै भक्ति भावनाइ च्ये कुन लगि निशिदयन
भक्तिवत्सल भक्तिछ'ल ब्ल' बल फरि गु)ड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान द'रिथ रटि प्राण बुद्ध चित् त् मन
यम' नियम शम' दमं' सभि मन स्वरि सुइ दै क्षन् क्षन
मन ज़ीनिथ भु)ज चीनिथ गच्छि जीनिथ भवनन
। शिव शङ्कर ।१३

यस सम स्तुति प'त्य अचि हन सु)स्त आ'स्तन व्यभवन
लोर आ'स्य न अन' धन त'इ धर' बारन त सन्तनन
व्यवहार च्यन काम्यन प्यठ पंदयन हय्ज कामिजन
प्रारब्धुक भोग भूगान भूगवुन जन स्वपनन

र'गी जन सा'रसई सू.'त्य त्य'गिथ सर्व कामनन
गच्छि संसार सर तरिथ लढ़ करान सह जन
। शिव शङ्कर ।१४

यु)दवै ओर' क'ङ्गिस इयि मङ्ग सङ्ग मेल्यस साधू जन्
साधू ज़ऩ युस सृमि चीतनाइ ममुताइ निशि आसि म्यन्
म्यु)न रु)त कु)ति द्वन्द'मावत' छ्यन दिथ सर्व कामनन
शम' दम' ज्ञान विज्ञान' सु)स्त रु)स्थ कपटन त़ कल्पनन
ब्रह्म तत पर आसि आस्यस परेहठ सर्व विषयन्
बु)ड़ दुर्लभ़ छु यु)थ मेलुन ल'भ्य स'ब ह्यू साधू जन्
। शिव शङ्कर ।१५।

युस कांह यछि पा'नस रुत कुत त्रा'वि प्राव्य शुद्ध मन
शुद्ध मन' भक्ति मावत' गु)ण कऩ थावि साधू वचनन
साधू वचनन् प्राव्य जाग्रत जागि़ राग ह्यथ समयन
समय वात्यस शम' यम' नियम पानै त'रि तस म'चरन
दीन' दयाल ही कृपाल' का'न्स्य ति छन' गत़ चाञ्य व्यन
सत् माव' छम सत् चा'नि सत् गथ दिम मगवन
। शिव शङ्कर ।१६।

त्यलि़ च्यूनुम ब़ ज़ि क्या छुस यलि वा'चम चेनवन
चेनऩ आयम दयाचा'ञ्य चेनना'वान सेवकन
मक्त यु)दवै मुक्त था'वहम मुक्त छुस निशबन्धनन

सुप्रकाशक अविना'शी मा'श्यविथ ज्यन' मरनन
सत् चित्त् आनन्द रूप' स्थित निथ्य् ह्यथ निर्गुण गण
प'ज़ दया चा'न्य सा'रइ करि क्या भ्यनि वन' वन
। शिव शङ्कर ।१७।

शान्त निर्मल भ्रान्त' छ्‌म चा'न्य मानतम सार म्यानि वन' वन
शुभ दृष्टि शिव करतम नाव च्योन शुभ अशुभन
शुभदायक शुभ दृष्ट चा'न्य सा'र शुभ अशुभनन
शूभवुन च्इ त्रयन भुवनन शूभ्रहथ पोश् वंषरणन
शूमरा'वतम ज्ञान सम्पदा शूभ युथ् इयि जगतन
शूभ सा'रइ म्य् चा'नि दया चा'नि कृपा भगवन
। शिव शङ्कर ।१८।

अविनाशे ब'ढ् आश श्रतम नाश कर हा कल्पनन
आशा' पूर' आशा च'न्य आश छ्‌म राश पपनन्
घटि हिन्दि घाश चित् प्रकाश घाश अन्तम नेत्रन
माशविथ रोज़ सर्व कल्पनन नाशविथ सर्ववासनन
परम' आकाश शांत प्रकाश च्ई घाशर घाशरन
पूर्ण प्रसाद गुरु प्रसाद करू प्रसाद भगवन
। शिव शङ्कर ।१९।

संसारचीय छु च्च् आशा' शुरि मुरि तै सन्तनन
मा'इ बन्ध तै धन' सम्पत घर बार तै स्त्री जन्

सार असोर भ्रम सोरइ' मृगतृष्णा युथ् जन्
शिव चई म्योन शुरि मुरि तै भा'इ बन्ध' तै सारी'जन्
चई मोल म'ज चई घर' बार चई सम्पत् द्यार धन्
चई सोरुइ चई सारइ सहा रोज़तम भगवन्
। शिव शङ्कर ।२०।

लूम छुमन् मनि स्वरगण हुन्द क्षूम' तिन्' म्य' नरकुन्
रुत' क्रुत' सुख' दुःख' छु भूगुण फल पन्नन्य कर्मन्
शिव नाव् सू.त्य थर थर अच्चान दूरे यम किन्करन्
शिव भक्ति स'न्ज छा'य छाञ्ढान मा'य पनने दीवगण्
अख् शुभ दृष्ट शिव छ'र् च'न्य लछ व्यमवन त् स्वरगण
स्वै शुभ' दृष्ट' म्यति करतम पानै बरतम भगवन्
। शिव शङ्कर ।२१।

नव न'थीश्वर चई छुख् नव निधान चई सेवकन्
नवि खतु नु)व नु)व भ् ब'छ'हत नो नो लांग नवनन्
नव घड्ढिथ नो रटिथ नो प्रणव व्याहरन्
भौ दयक्षपाल ह्यथ रोज़तम ईश र'च्छ निशि विघ्नन
नवदुर्गा करि पक्ष म्योन युस रच्छान छै शरणन्
नव द्वार पूर खस' वुफ' ह्यथ नव वु'नि शिव भुवनन्
। शिव शङ्कर ।२२।

गुरु लगयो पादि कमलन सत् गुरु लगयो चरितन् ॥
शिव शङ्कर भव भय हर हर लगयो चरणन् ॥